

ONION - PACKAGE OF PRACTICES

Congratulations! You have chosen one of the finest Onion seeds from the Crystal family. Crystal has solid experience in producing high-quality Onion seeds. These seeds are the result of extensive research, aimed at developing high-yielding hybrid crops suitable for diverse agricultural climates. Crystal adopts the latest technologies during seed production to ensure that farmers receive seeds of the highest quality. Crystal's Onion seeds provide excellent germination & better Vigor with tolerance to biotic & abiotic stresses. Kindly adopt the best farming practices to get outstanding yield. The following general recommendations are provided, so we kindly ask you to read these recommendations before making any decisions.

Onion Variety	Maahi, Virat	Maahi, Red Admire, SPS Vega, Vega	Indus, Gulabi, Indus Red, Red Admire, SPS Gulabi, SPS Red							
Duration	110-120 DAS	85-90 DAS	100-110 DAS							
Kharif	Yes	Yes	Yes							
Rabi	Yes	Yes	Yes							
Spring	Yes	Yes	Yes							
Source of Irrigation	Rainfed & Irrigated (Drip, Sprinkler, Rainfed hose & surface irrigation)	Rainfed & Irrigated (Drip, Sprinkler, Rainfed hose & surface irrigation)	Rainfed & Irrigated (Drip, Sprinkler, Rainfed hose & surface irrigation)							

Please note according to weather conditions crop growth & maturity may be different

S. No.	Particulars/ operations/Practice	Details of operation. input per acre
1	Suitability for the area. Agro climatic zone	Temperature: Onion is a cool-weather crop that is hardy and tolerates some freezing. It grows best in spring and autumn. Onion seeds germinate at soil temperatures from 4.5 to 30°C, with the optimum being 18 to 24 °C.
2	Land / Soil	Onion does best on deep and well-drained, loose, loamy to sandy soils. Onion prefers a soil pH of 5.8 to 7.0, but can tolerate a pH of up to 7.6.
3	Season. Sowing/ planting time	The sowing times differ with production areas. In winter rainfall areas, seed may be sown from August to end of March and from end of August to middle of March in areas with cool summer.
4	Seed rate. Sowing/ planting method.	Broadcasting method - 3 to 4 kg /acre, Transplanting method - 1 - 1.5kg /acre
5	Preparation of Main field and planting	The seedbed should be well prepared by ploughing 15 to 20 cm deep to break up clods. The soil should also be as level as possible, have a good crumb structure and enough moisture, and be free of unrotted plant material.
6	Spacing	10 to 15cm between plants in a row, with rows spaced 15 to 20 cm apart.
7	Seed treatment before sowing	All seeds to be planted should be washed in running water for at least 2 hours. It is recommended that seeds are soaked in 0.5 % 2-methoxyethylmercury chloride solution for 20 minutes. Soaked seeds are dried for at least 6 hours at room temperature before sowing.
8	Manures and Fertilizers	Nitrogen fertilizing is important and 120-160 kg/acre of limestone, ammonium nitrate or ammonium sulphate, depending on soil analysis, are applied in 2 or 3 dressings during the growing season. About 60 kg/acre of nitrogen is usually applied at planting time and the rest when the plants are about 10 to 15 cm high. A total of 200-240 kg/acre of superphosphate and 80-120 kg/acre of potassium chloride are applied just before sowing. Alternatively, a fertilizer mixture of 2:3:2 (22) at 400-480 kg/acre may be applied. It should be noted that these are general recommendations and actual amounts of fertilizers should be based on soil analysis.
9	Irrigation schedule	The soil should never be allowed to become dry and it should be kept moist to a depth of 20 to 25 cm. The plantings should receive light water applications daily until the young seedlings come up. About 30 mm of water should be supplied per irrigation. Large fluctuations in soil moisture content will result in poor quality roots that are malformed and have many small hairs or side roots.
11	Weeding/ inter-cultivation	Weeds must be controlled before they can compete with onion seedlings and interfere with their growth. All weeds between the rows must be removed by hand to avoid damaging the roots. Weed control can also be achieved chemically by applying herbicides and instructions on the container should be thoroughly followed.
12	Micronutrient/ growth regulator sprays	Micronutrients mix spray may enhance Onion growth and yield.
13	Pest and Disease control	*Aphids: Fonicamid 50 % WG (0.5 gm/litre) *Red spider: Spiromesifen 240 SC (1 ml/litre) *Cercospora leaf spot: Drench with Carbendazim (1gm/ litre) *Downy mildew : Tebuconazole 50% + Trifloxystrobin 25% WG (0.5 to 1 gm per litre) or Chlorothalonil 75% WP 1.0 ml/Liter *Scab & Damping off: Drenching with Carbendazim (1gm/litre) <u>For more information to control & disease in field, please consult your local agriculture officers.</u>
14	Harvest	Crop is ready for harvest at 100-120 days after sowing, some early varieties can be harvested at 85-90 days.
15	Expected yield	Yields 8-10 tons from a well managed crop under ideal conditions.
16	Storage	To maximize their shelf life, onions should be stored in a cool, dry, well-ventilated area. The ideal temperature is between 7-13°C
17	Don't Do	Late transplanting, More spacing, Excess fertilizers, Over watering, Waterlogging. Storing onions in direct sunlight, plastic bags, or in the refrigerator, as these conditions can shorten their lifespan.
18	Do's	Harvest when the tops start to yellow and fall over. Allow bulbs to cure in the field for a few days before storing. Store onions in a cool, dry, well-ventilated area.
Note	The above information is a general advisory. For specific recommendations related to particular region, please contact your local State Agriculture Department.	
Precautions	Crop growth and yield can be affected by various factors. Therefore, it is recommended to consult your local agricultural officer for advice. Ensure that only high-quality fertilizers and pesticides are used. Retain the bills for the purchase of seeds, fertilizers, and pesticides.	

प्याज-की खेती के तरीके

बुधार्द्र हो आये किस्टन परिकार के प्याज की बेहतरीन किस्म के बीजों में से एक को चुना है। किस्टन कंपनी को उच्च दर्जे के प्याज के बीजों के उत्पादन का समुद्र अनुभव है। ये बीज प्याज बीज के फलस्वरूप विकार किए गए हैं, ताकि अलग-अलग खेती की परिस्थितियों में अधिक उपज देने वाली हाइब्रिड फसल विकसित की जा सके। किस्टन कंपनी बीज निर्यात में आयुक्त तकनीकों का उपयोग करती है, जिससे किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज मिल सके। किस्टन के प्याज के बीजों में उच्च अंकुरण क्षमता, मजबूत पौध बूटि और रोप तथा पचकरपीय तमसों के प्रति अच्छी सहनशीलता होती है। बेहतरीन परिणाम प्राप्त करने हेतु खेती के अनुसंधित तरीकों को अपनाएँ। आगे कुछ सामान्य मुद्दाय दिए जा रहे हैं, इसलिए हम अपने किनवतापूर्वक अनुभव करते हैं कि किसाना तैय से पहले कृपया टाउने अच्छी तरह पढ़ लें।

प्याज की किस्म	सही, मिटर	सही, सेइ इंच/सेइ, सप्लीक केग, केग, सेइ, मिटर	सही, सेइ इंच/सेइ, सप्लीक केग, केग, सेइ, मिटर
अनुरि	110-120 DAS	85-90 DAS	100-110 DAS
सुरीक	हाँ	हाँ	हाँ
रुबी	हाँ	हाँ	हाँ
समत	हाँ	हाँ	हाँ
सिंचार्ड का खेत	सर्वा पर सिंचार्ड और सिंचित क्षेत्र (ड्रिप, सिंचक, टेन्केड हाइ और सतही सिंचार्ड)	सर्वा पर सिंचार्ड और सिंचित क्षेत्र (ड्रिप, सिंचक, टेन्केड हाइ और सतही सिंचार्ड)	सर्वा पर सिंचार्ड और सिंचित क्षेत्र (ड्रिप, सिंचक, टेन्केड हाइ और सतही सिंचार्ड)

कृपया ध्यान रखें कि कृषकानु की स्थिति के अनुसार फसल बूटि और परिष्क होने का समय समान-समान हो सकता है

क्र. सं.	विषय/ संभावित/टिप्पण	कार्यवाही का विवरण/ उचित एकाइ
1	अंश के लिए उपयुक्तता। भूमि-जलवायु क्षेत्र	सामान्य: प्याज ठंडे मौसम की फसल है, मजबूत और अस्थिर जमी हुई परिस्थितियों को सहन करने में समर्थ है। उष्ण विचार समत और शरद ऋतु में सबसे अधिक होता है। प्याज के बीज मिट्टी के 4.5-30°C तापमान पर अंकुरित होते हैं, और आदर्श तापमान 18-24°C है।
2	भूमि / मिट्टी	प्याज की खेती के लिए सहरी, अच्छी जल निकासी वाली, ढीली दोमट से रेतीली मिट्टी आदर्श होती है। प्याज के लिए आदर्श मिट्टी का pH 5.8-7.0 है, हालांकि यह 7.6 तक के pH को सहन कर सकता है।
3	सामान्य बुधार्द्र/रोपाई का समय	उष्णमन क्षेत्रों के शिशव से बुधार्द्र के समय में अंतर होता है। शीतकालीन सर्वा क्षेत्रों में बीज अवरण से मार्च के अंत तक बोए जा सकते हैं, जबकि ठंडे सर्वाओं वाले क्षेत्रों में अवरण के अंत से मार्च के मध्य तक दूसरी बुधार्द्र की जा सकती है।
4	बीज दर। बुधार्द्र/रोपाई का तरीका	अंतरिक्षांतरित विधि में 3-4 किग्रा/एकड़ और ट्रांसप्लान्टिंग विधि में 1-1.5 किग्रा/एकड़ बीज बोएँ।
5	सुख क्षेत्र की तैयारी और रोपाई	बीज बोने के लिए भूमि को अच्छी तरह तैयार किया जाना चाहिए, 15-20 सेमी गहरी बुधार्द्र करने मिट्टी के क्षेत्रों को तोड़ना आवश्यक है। भूमि समतल, अच्छी निकासी वाली, पर्याप्त नमी वाली और बिना अपघटित पौध अवशेषों के मुक्त होनी चाहिए।
6	पौधों के बीच दूरी	एक पंक्ति में पौधों के बीच 10-15 सेमी और पंक्तियों के बीच 15-20 सेमी की जगह छोड़ें।
7	बुधार्द्र से पहले बीज उपचार	बुधार्द्र से पहले सभी बीजों को पहले पानी में कम से कम 2 घंटे धोएँ। बीजों को 0.5% 2-मेथिलीमिथाइलप्रैकरी क्लोराइड सोल्यूशन में 20 मिनट के लिए डुबोना चाहिए। बुधार्द्र से पहले फिगोए गए बीजों को कमरे के तापमान पर 6 घंटे तक सुखाएँ।
8	सैविक और रासायनिक उर्वरक	माट्टोडोजन का उपयोग जल्दी है, और मिट्टी की जांच के अनुसार 120-160 किग्रा/एकड़ फुना, अमोनियम नाइट्रेट का अमोनियम सॉल्यूट 2-3 बार फसल अवधि में डुबिया के रूप में दिया जाता है। माट्टारण और पर 60 किग्रा/एकड़ नाइट्रोजन बुधार्द्र के समय लगाया जाता है, जबकि सारी तक दिया जाता है जब पौधे 10 से 15 सेमी की ऊँचाई तक पहुँच जाते। बुधार्द्र के पहले कुल 200-240 किग्रा/एकड़ यूरकॉम्पेक्ट और 80-120 किग्रा/एकड़ पोटेशियम क्लोराइड डाला जाता है। इसके स्थान पर, 2:3:2 (2:2) वाले उर्वरक का मिश्रण 400-480 किग्रा/एकड़ की मात्रा में डाला जा सकता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि ये सामान्य सुझाव हैं, जबकि उर्वरक की सही मात्रा मिट्टी के विश्लेषण के आधार पर तब की जाती चाहिए।
9	सिंचार्ड कार्यक्रम	मिट्टी को सुखने नहीं देना चाहिए और 20-25 सेमी गहरी तक नमी रकनी चाहिए। छोटे पौधों के निकलने तक उसे प्रतिदिन हावक पानी दें। हर बार सिंचार्ड करते समय लगभग 30 मिमी पानी देना चाहिए। यदि मिट्टी की नमी में अधिक परिवर्तन होता है, तो जड़ें विकृत हो जाती हैं और उन पर छोटे-छोटे रोएँ या महायक जड़ें उभर आती हैं।
11	सिंचार्ड/ क्षेत्र की बीच-बीच में बुधार्द्र	प्याज के पौधे के बढ़ने से पहले ही खरपटवारी को मज कर देना चाहिए, ताकि वे किसान में रुकावट न डालें। जड़ को थोड़ा पहुँचाएँ किना पंक्तियों के बीच की सभी पाल-नुल को हाथ से निकालना आवश्यक है। खरपटवारी नियंत्रण हेतु खरपटवारी मासक रसायन का उपयोग किया जा सकता है, परंतु कंट्रोल पर निम्ने निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए।
12	पौधक तत्व और किसान नियामक का छिडकाव	प्याज की फसल की बूटि और पैदावार बढ़ाने के लिए मुख्य पौधक तत्वों का मिश्रित छिडकाव लाभदायक होता है।
13	सैविक-पतंग और रोग नियंत्रण	पुष्कित: फ्लोनिक्वामिड 50% WG (0.5 ग्राम/लीटर) रेड स्प्राइटर: स्प्राइरमेथिलेन 240 SC (1 मि.सी./लीटर) सकांमोरा सीक स्प्रेट: कांवेन्सॉलिन (1 ग्राम/लीटर) का छिडकाव करें डाउनी मिडल: डेबुकोनाजोल 50% + ट्राक्लोक्सीमेटोक्सीन 25% WG (0.5 से 1 ग्राम/लीटर) या क्लोरोक्वॉलिन 75% WP (1.0 मि.सी./लीटर) फ्लैक और सीपिग ऑक: कांवेन्सॉलिन (1 ग्राम/लीटर) डालें <u>नोट में रोग और बीज नियंत्रण के संबंध में अधिक जानकारी के लिए अपने नजदीकी कृषि अधिकारियों से सलाह लें।</u>
14	फसल काटना	सामान्य रूप से फसल बुधार्द्र के बाद 100-120 दिनों में तैयार होती है, जबकि कुछ प्रारंभिक किस्में 85-90 दिन में कटाई के योग्य होती हैं।
15	अनुमानित उपज	उपयुक्त प्रबंधन और आदर्श स्थितियों में फसल से 8-10 टन उपजदन होता है।
16	भंडारण	सबसे समय तक सुरक्षित रखने के लिए प्याज को ठंडी, शुष्क और हवादार स्थान पर संरक्षित करें। आदर्श तापमान 7-13 डिग्री सेल्सियस होता है।
17	कटा न करने	दर से पीछारोपण, जलवा दूरी, अस्थिर उर्वरक, अस्थिर सिंचार्ड, जलभराव। प्याज को धूप में, प्लास्टिक बैग में या रेडिरेटर में न रखें, ऐसा करने से उसकी आयु कम हो सकती है।
18	कटा करें	जब पौधों के ऊपरी भाग पीले होने और नीचे सिरेन तम, सभी फसल की कटाई करें। भंडारण से पहले प्याज को क्षेत्र में कुछ दिनों तक ठीक सुखाएँ। प्याज के भंडारण के लिए ठंडी, शुष्क और हवादार स्थान चुनें।

नोट यह जानकारी सिर्फ सामान्य जानकारी के लिए है। विशेष क्षेत्र से जुड़ी अनुसंधानों के लिए कृपया अपने संबंधित राज्य कृषि विभाग से संपर्क करें।

घाबकारी फसल बूटि और उपज पर अलग-अलग तत्वों का प्रभाव पड़ सकता है। अतः सलाह है कि सुझाव के लिए अपने नजदीकी कृषि अधिकारी से परामर्श करें। यह सुनिश्चित करें कि बेहतरीन सुझाव के उर्वरक और कीटनाशक ही इस्तेमाल हो। बीज, उर्वरक और कीटनाशक की खरीद के लिए अपने पास रखें।



ડુંગળી - ખેતી માટેની સલામત કરેલી પદ્ધતિઓ

અભિનંદન! તમે કિસ્ટલ પરિવારમાંથી એક શ્રેષ્ઠ ડુંગળીના બીજ પસંદ કર્યા છે. કિસ્ટલને ઉચ્ચ ગુણવત્તાવાળા ડુંગળીના બીજનું ઉત્પાદન કરવાનો સારો અનુભવ છે. આ બીજ વ્યાપક સંશોધનનું પરિણામ છે, જેનો ઉદ્દેશ્ય વિવિધ કૃષિ આબોહવા માટે યોગ્ય ઉચ્ચ ઉપજ આપતા હાઈબ્રિડ પાક વિકસાવવાનો છે. ખેડૂતોને ઉચ્ચ ગુણવત્તાવાળા બીજ મળે તે સુનિશ્ચિત કરવા માટે કિસ્ટલ બીજ ઉત્પાદન દરમિયાન નવીનતમ તકનીકો અપનાવે છે. કિસ્ટલના ડુંગળીના બીજ ઉત્તમ અકુરણ અને વધુ સારી શક્તિ પ્રદાન કરે છે, સાથે જૈવિક અને અજૈવિક તાણ સહન કરે છે. ઉત્તમ ઉપજ મેળવવા માટે કૃપા કરીને શ્રેષ્ઠ ખેતી પદ્ધતિઓ અપનાવો. નીચે આપેલ સામાન્ય સલામતી આપવામાં આવી છે, તેથી અમે તમને કોઈપણ નિર્ણય લેતા પહેલા આ સલામતી વાંચવા વિનંતી કરીએ છીએ.

ડુંગળીની વિવિધતા	માઠી, વિરાટ	માઠી, રેડ Achira, એસપીએસ વેગા, વેગા, વીરા, વિરાટ	ઠેસ ગુલાબી, ઠેસ રેડ, રેડ એસમાયર, એસપીએસ ગુલાબી, એસપીએસ રેડ
સમઘડાળી	110-120 DAS	85-90 DAS	100-110 DAS
ખરીફ	હા	હા	હા
રાબી	હા	હા	હા
વસંત	હા	હા	હા
સિંચાઈનો સ્ત્રોત	વરસાદી અને સિંચાઈ (ટપક, છંટકાવ, વરસાદી નળી અને સપાટી સિંચાઈ)	વરસાદી અને સિંચાઈ (ટપક, છંટકાવ, વરસાદી નળી અને સપાટી સિંચાઈ)	વરસાદી અને સિંચાઈ (ટપક, છંટકાવ, વરસાદી નળી અને સપાટી સિંચાઈ)

કૃપા કરીને નીચે લે છે કયામાન પરિસ્થિતિઓ અનુસાર પાકનો વિકાસ અને પરિપક્વતા અલગ અલગ હોઈ શકે છે.

ક્રમ નં.	વિગતો/કામગીરી/પિંચિસ	કામગીરીની વિગતો, પ્રતિ એકર ઇંચપુટ
1	વિસ્તાર માટે યોગ્યતા, કૃષિ આબોહવા ક્ષેત્ર	તાપમાન ડુંગળી ઠંડાવામાં આવતો પાક છે જે સખત હોય છે અને થોડી ઠંડી સહન કરે છે. તે વસંત અને પાનખરમાં શ્રેષ્ઠ રીતે વધે છે. ડુંગળીના બીજ 4.5 થી 30° સેલ્સિયસ માટીના તાપમાને સંગ્રહિત થાય છે, જેમાં શ્રેષ્ઠ તાપમાન 18 થી 24° સેલ્સિયસ છે.
2	જમીન / માટી	ડુંગળી ઊંડી અને સારી રીતે પાણી નિતારેલી, ફેરી, જોરડાથી રેવાળ જમીનમાં શ્રેષ્ઠ થાય છે. ડુંગળી 5.8 થી 7.0 ની માટીનું pH પસંદ કરે છે, પરંતુ 7.6 થી 8.0 ની માટીને સહન કરી શકે છે.
3	જમીન, વાવણી/વાવેતરનો સમય	વાવણીનો સમય ઉત્પાદન ક્ષેત્ર અવલોક્ય છે. શિયાળામાં વરસાદ પડવા વિસ્તારમાં, ઓગસ્ટથી માર્ચના અંત સુધી અને ઠંડી ઉનાળાવાળા વિસ્તારોમાં ઓગસ્ટના અંતથી માર્ચના મધ્ય સુધી બીજ વાવી શકાય છે.
4	બીજ દર. વાવણી/વાવેતર પદ્ધતિ.	છંટકાવ પદ્ધતિ - 3 થી 4 કિગ્રા/એકર, રોપણી પદ્ધતિ - 1 - 1.5 કિગ્રા/એકર
5	મુખ્ય ખેતરની તૈયારી અને વાવેતર	કેન્ડી તોડવા માટે 15 થી 20 સેમી ઊંડે પ્રેસાઈ કરીને બીજનો કચરો સારી રીતે તૈયાર કરવો જોઈએ. માટી કાચ તેટલી સમતલ હોવી જોઈએ, સારી ભૂમી રચના અને પૂરતો ભેજ ધરાવતી હોવી જોઈએ, અને તેમાં સડો ન લાગેલો હોવો પડાયો ન હોવો જોઈએ.
6	અંતર	લાઈનમાં 80 વચ્ચે 10 થી 15 cmનું અંતર રાખો, ફરોમાં 15 થી 20 cmનું અંતર રાખો.
7	વાવણી પહેલાં બીજ માવજત	વાવવાના સમય બીજ ઓગામમાં ઓછા 2 કલાક સુધી વહેવા પાછીમાં મેલા જોઈએ. બીજને 0.5% 2-મેથેક્સીપીલોથાઇમરક્ટ્રી ક્લોરોઇડના બ્રાવરમાં 20 મિનિટ માટે પલાણી સખવાની સલામતી કરવામાં આવે છે. વાવણી કરતા પહેલાં પલાણીલ બીજને ઓગામના તાપમાને ઓછા 6 કલાક સુધી સૂકવવામાં આવે છે.
8	ખાતર અને ખાતરી	ખાતર/ખાતર ખાતર આપવું અનુભવથી છે અને વાકીના વિસ્તારમાં આપવું 130-140 કિગ્રા/એકર સુધી અને પાનખર/સેપ્ટેમ્બર સુધી તેજવાળી રાખવી જોઈએ. જ્યાં સુધી માન્ય રીતે ન આવે ત્યાં સુધી કોનેટ દરરોજ ઠંડાવા પાણીનો ઉપયોગ માળવો જોઈએ. પ્રતિ હિસાબે લગભગ 30 મીની પાણી આપવું જોઈએ. જમીનમાં ભેજનું પ્રમાણ મેટ પ્રમાણમાં વધારી શકાયો નહીં. ગુણવત્તાવાળા માન્ય નમતો જે ખોલ આકરના ફેસ અને તેમાં ઘણા નવા વાળ અથવા બજાજનું મૂલ્ય હશે.
9	સિંચાઈ સમયપત્રક	માટીની ક્ષારક સુધી ન થવા દેવી જોઈએ અને તેને 20 થી 25 સે.મી.ની ઊંડાઈ સુધી ભેજવાળી રાખવી જોઈએ. જ્યાં સુધી માન્ય રીતે ન આવે ત્યાં સુધી કોનેટ દરરોજ ઠંડાવા પાણીનો ઉપયોગ માળવો જોઈએ. પ્રતિ હિસાબે લગભગ 30 મીની પાણી આપવું જોઈએ. જમીનમાં ભેજનું પ્રમાણ મેટ પ્રમાણમાં વધારી શકાયો નહીં. ગુણવત્તાવાળા માન્ય નમતો જે ખોલ આકરના ફેસ અને તેમાં ઘણા નવા વાળ અથવા બજાજનું મૂલ્ય હશે.
11	નીંદા/અંતર-ખેતી	ડુંગળીના રોપણો સારી સમયાંતરે અને તેમાં વિકાસમાં અવરોધ ઉભો કરે તે પહેલાં નીંદાનું નિયંત્રણ કરવું આવશ્યક છે. મૂળને નુકસાન ન થાય તે માટે પંજિરો વચ્ચેના ત્યામ નીંદાનું ઉપયોગ કરવું આવશ્યક છે. નીંદાનું નિયંત્રણ રાસાયણિક રીતે પણ નિયંત્રણકારીને ઉપયોગ કરીને મેળવી શકાય છે અને કહેનર પર્ણી સૂચનાઓનું સખું પાલન કરવું જોઈએ.
12	મૂકમ પોષકતત્વો/વૃદ્ધિ નિયંત્રકાર સ્પે	મૂકમ પોષકતત્વોના નિયંત્રકાર છંટકાવ ડુંગળીના વિકાસ અને ઉપજમાં વધારો કરી શકે છે.
13	જાવાત અને રોગ નિયંત્રક	**મોલો મશર: ફ્લોનીકામિડ 50% WG (0.5 ગ્રામ/હિટર) **લાલ કોળિયો: સ્પાયરોમેથેક્સિમ 240 SC (1 મિલી/હિટર) **સક્રીયોસા: પાનના ટપકા: ક્લોરોટાઝીમ (1 ગ્રામ/હિટર) થી ભીંજવો **ગુળી: માઇલેટુ: કેનુકોનિપ્રોલિમ 25% WG (0.5 થી 1 ગ્રામ પ્રતિ હિટર) અથવા ક્લોરોથાલોપ્રોલિમ 75% WP 1.0 મિલી/હિટર **કેન અને લોનાક દૂર કરવા: કાર્બેન્ડાઝીમ (1 ગ્રામ/હિટર) સાથે લીનાસ <u>ખેતરમાં રોગ નિયંત્રક અને નિસંત્રક માટે વધુ માહિતી માટે, કૃપા કરીને તમારા સ્થાનિક કૃષિ અધિકારીઓનો સંપર્ક કરો.</u>
14	લણણી	વાવણી પછી 100-120 દિવસે પાક લણણી માટે તૈયાર થાય છે, કેટલીક સ્થાનમાં જાતો 85-90 દિવસે લણણી કરી શકાય છે.
15	અપેક્ષિત ઉપજ	આદર્શ પરિસ્થિતિઓમાં સારી રીતે સંચાલિત પાકમાંથી 8-10 ટન ઉપજ મળે છે.
16	સંરક્ષ	ડુંગળીનો સંરક્ષ મહત્તમ રહે તે માટે, તેને ઠંડા, સૂકા, સારી રીતે ઠંડાની અવજવરવાળા વિસ્તારમાં સંગ્રહિત કરવી જોઈએ. આદર્શ તાપમાન 7-13° સેલ્સિયસ વચ્ચે છે.
17	ના કરો	મોડું રોપણી, વધુ અંતર, વધુ પડતું ખાતર, વધુ પડતું પાણી આપવું, પાણીનો ભરવો. ડુંગળીને નીંદા સૂર્યપ્રકાશમાં, પલાઈકની શેલીઓમાં અથવા રેફ્રિજરેટરમાં સંગ્રહિત કરવી, કાચુ કે આ પરિસ્થિતિઓ તેનું અવ્યુજ ધરાવી શકે છે.
18	ધું કરવું	ખાતરે ઠોચ પીળી થવા લાગે અને ખરી પડે ત્યારે કાપણી કરો. સંરક્ષ કરતા પહેલાં કદને ખેતરમાં ઘોડા દિવસો માટે સુકાઈ જવા દો. ડુંગળીને ઠંડા, સૂકા, સારી રીતે ઠંડાની અવજવરવાળી જગ્યાએ સંગ્રહિત કરો.
નોંધ	ઉપરોક્ત માહિતી એક સામાન્ય સલામતી છે. ચોક્કસ પ્રદેશ સંચાલિત ચોક્કસ સલામતી માટે, કૃપા કરીને તમારા સ્થાનિક રાજ્ય કૃષિ વિભાગનો સંપર્ક કરો.	
સાવધેનીય પગલાં	પાકની વૃદ્ધિ અને ઉપજ વિવિધ પરિસ્થિતિમાં પ્રભાવિત થઈ શકે છે. તેથી, સલામતી માટે તમારા સ્થાનિક કૃષિ અધિકારીનો સંપર્ક કરવાની સલામતી કરવામાં આવે છે. ખાતરી કરો કે કદન ઉચ્ચ ગુણવત્તાવાળા ખાતરો અને જંતુનાશકોનો ઉપયોગ થાય છે. બીજ, ખાતર અને જંતુનાશકોની ખરીદીના બિલ સાચવી રાખો.	

कांदा - पीक व्यवस्थापन पद्धती

अभिलेखना सुद्धी क्रिस्टल कुटुंबातील कांद्याच्या सर्वोत्तम विभाग्यांपैकी एक विभागे निवडले आहे. क्रिस्टलचा उच्च दर्जाचे कांद्याचे विभागे तयार करण्याचा कांदा अनुभव आहे. विविध कृषी हवामानासाठी योग्य उच्च-उत्पादन देणारी संकलित पिके विकसित करण्याच्या उद्देशाने केलेल्या व्यापक संशोधनाचे परिणाम म्हणून हे विभागे शेतकऱ्यांना उच्च दर्जाचे विभागे मिळावे यासाठी क्रिस्टल मेहरीच विभागांच्या उत्पादना दरम्यान नवीनतम तंत्रज्ञानाचा अवलंब करते. क्रिस्टलचा कांद्याच्या विभागांमुळे, जैविक आणि अजैविक ताण सहन करण्याच्या शक्तीसह पिके जोमाने उगवतात आणि वाढतात. उष्ण उन्हाट्यात मिळविण्यासाठी कृष्या सर्वोत्तम श्रेणी पद्धतीचा अवलंब करा. घाली सामान्य शिफारसी दिल्या आहेत, त्यामुळे कोणताही निर्बंध घेण्यापूर्वी आम्ही तुम्हाला या शिफारसी वाचण्याची विनंती करतो.

सांघाणी विविधता	माही, विरट	माही, रेड एडमावर... एस्पीएस वेणा, वेणा, वीच, विरट	इंटर दुलाची, इंटर रेड, रेड एडमावर, एस्पीएस गुलाची, एस्पीएस रेड
कालावधी	110-120 दिवसांनी (दि)	85-90 दिवसांनी	100-110 दिवसांनी
सुरीय	होय	होय	होय
रज्जी	होय	होय	होय
वसंत ऋतू	होय	होय	होय
सिंचनाचा स्रोत	पावसाळी आणि सिंचनाखालील (टिबक, फवारणी, पावसाचे पाणी आणि पृष्ठभागावरील सिंचन)	पावसाळी आणि सिंचनाखालील (टिबक, फवारणी, पावसाचे पाणी आणि पृष्ठभागावरील सिंचन)	पावसाळी आणि सिंचनाखालील (टिबक, फवारणी, पावसाचे पाणी आणि पृष्ठभागावरील सिंचन)

कृष्या सोबत च्या की, हवामानाच्या परिस्थितीनुसार पिकाची वाढ आणि परिपक्वता वेगवेगळी असू शकते.

सु. क्र.	तपशील/कामकाज/संपन्न कृती	कांदाचे तपशील, प्रति एकर उत्पादन
1	शेतासाठी सुसंगतता. कृषी हवामान क्षेत्र	तापमान: कांदा हे थंड हवामानातील पीक आहे जे टिबका असते आणि काही प्रमाणात थंडी सहन करते. वसंत ऋतू आणि शरद ऋतूमध्ये ते चांगले वाढते. कांद्याचे विभागे 4.5 to 30" ते मॉन्सून तापमानात उगवतात, ज्यासाठी उष्ण तापमान 8 ते 24 ° सेल्सियस असते.
2	जमीन/माती	कांदा खोल आणि चांगला निचरा होण्याचा, तेल, चिकणमाती ते वाळूच्या जमिनीत चांगले वाढते. कांद्यासाठी 5.8 ते 7.0 मातीचा pH योग्य असतो, परंतु 7.6 पर्यंत pH सहन करू शकतो.
3	हंगाम, पेरणी/तागवडीची वेळ	इत्यान क्षेत्रानुसार पेरणीचा काळ वेगवेगळा असतो. हिवाळ्यातील पावसाळी भागात, ऑगस्ट ते मार्च अखेर आणि थंड उन्हाळा असलेल्या भागात ऑगस्ट अखेर ते मार्चच्या मध्यापर्यंत विभागे पेरता येते.
4	विभागांचा दर पेरणी/तागवडीची पद्धत	पेरणी पद्धत - 3 ते 4 किलो/एकर, तागवड पद्धत - 1 - 1.5 किलो/एकर
5	सुस्थ शेताची तयारी आणि लागवड	मातीचे डेकूळ फोडण्यासाठी 15 ते 20 सेमी खोल नांगरी करून बीजत चांगले तयार करावे. माती शक्य तितकी समतल असावी, चांगली रचना असावी आणि तिच्यात पुरेसा ओवसा असावा आणि कुजलेल्या वनस्पतीपासून मुक्त असावी.
6	अंतर	एका ओळीतील रोपांमध्ये 10 ते 15 सेमी अंतर ठेवावे, ओळीमध्ये 15 ते 20 सेमी अंतर ठेवावे.
7	पेरणीपूर्वी विभागांचा प्रक्रिया	तागवड करायच्या सर्व विभागांसाठी 2 तास वाहत्या पाण्यात स्वच्छ धुवाव्यात. 0.5 % 2-मेथिलसिथिलमसुंदरी क्लोराईड द्रावणात 20 मिनिटे विभागे भिजवून ठेवण्याची शिफारस केली जाते. पेरणीपूर्वी भिजवलेले विभागे कम टेम्परेचरवर किमान 6 तास वाळवावे.
8	संश्लेषण पदार्थ आणि खते	नायट्रोजन खत देणे महत्वाचे आहे आणि माती विद्येपानुसार, बांदीच्या हंगामात 120-160 किलो/एकर बुनबरी, अमोनियम नायट्रेट किंवा अमोनियम सल्फेट 2 किंवा 3 वेळा जमिनीत मिसळले जातात. साधारणपणे लागवडीच्या वेळी सुमारे 60 किलो/एकर नायट्रोजन दिले जाते आणि उर्वरित प्रमाण हे रोपे 10 ते 15 सेमी उंच वाढ झाल्यावर दिले जाते. पेरणीपूर्वी एकूण 200-240 किलो/एकर सुपरफॉस्फेट आणि 80-120 किलो/एकर पोटॅशियम क्लोराईड घ्यावे. पॉस्फोरस, 400-480 किलो/एकर या प्रमाणात 2:3:2 (22) खत मिश्रण वापरले जाऊ शकते. हे लक्षात घ्यायला हवे की या सामान्य शिफारसी आहेत आणि घराचे प्रत्यक्ष प्रमाण माती विद्येपानुसार आणखित अयत्ने पाहिले.
9	पेरणीपूर्वी विभागांचे प्रक्रिया	माती कडीही कोरडी होऊ देऊ नका आणि ती 20 ते 25 सेमी खोलीपर्यंत ओलसर ठेवावी. जोपर्यंत रोपे कोवळी आहेत तोपर्यंत रोपांना दररोज थोडेसे पाणी घाला. प्रत्येक सिंचनासाठी सुमारे 30 मिमी पाणी घाला. जमिनीतील ओलाखालील मोठ्या चडउतारांसुळे सुळे बराब होताना, त्यांच्यामध्ये चिकणी घेते आणि त्यांच्यावर अनेक लहान केम किंवा फुटते फुटतात.
11	बुरगणी/अंतरमशागत	कांद्याच्या रोपांना तणाचा धोका असतो, म्हणूनच तणाचे नियंत्रण करणे आवश्यक आहे. मुळांना इजा होऊ नये म्हणून वाप्यातील सर्व तण हातात काढून टाकावेत. तणनाशके वापरून रसायनिक पद्धतीने तण नियंत्रण मिळवता येते आणि कॅटेरिअरील मुलांना कॅटेरिअरील पानन करावे.
12	सूक्ष्म पोषक घटक/वाढ निचामक फवारण्या	सूक्ष्म पोषक घटकांच्या मिश्रणाची फवारणी कांद्याची वाढ आणि उत्पादन वाढवू शकते.
13	कीटक आणि रोग नियंत्रण	मावा: फ्लोनिकामिड 50 % WG (0.5 ग्रॅम/लिट्र) नाल कोटी: स्पारोमेथिनेल 240 SC (1 मिमी/लिट्र) मकोस्पोरा पानांचे टिपके: कार्बेन्डाझिम (1 ग्रॅम/लिट्र) ची फवारणी करा कैबडा बुरगी: डेबुकोनाझोल 50% + ट्रायफ्लोक्झिमीस्ट्रोबिन 25% WG (0.5 ते 1 ग्रॅम प्रति लिटर) किंवा क्लोरोथॅनॉलिन 75% WP 1.0 मिमी/लिट्र ब्रुज आणि आई यानन रोग: कार्बेन्डाझिम (1 ग्रॅम/लिट्र) ची फवारणी करावी शेतातील नियंत्रणासाठी आणि रोगाच्या अधिक माहितीसाठी, कृष्या नुसच्या स्थानिक कृषी अधिकाऱ्यांचा सल्ला घ्या.
14	कापणी	पेरणीनंतर 100-120 दिवसांनी पीक कापणीसाठी तयार होते, काही वाण 85-90 दिवसांत काढता येतात
15	अपेक्षित उत्पाद	आदर्श परिस्थितीत चांगल्या प्रकारे व्यवस्थापित केलेल्या पिकामधून 8-10 टन उत्पादन मिळते.
16	साठवणूक	कांद्याचे आणुव वाढण्यासाठी, ते थंड, कोरळा, हवेगीर जागेत साठवले पाहिजेत. आदर्श तापमान 7-13 डिग्री सेल्सियस दरम्यान असते
17	कुरु तका	उगिरा लागवड, जास्त अंतर, जास्त खते, जास्त पाणी देणे, पाणी साचणे. कांदे थेट सूर्यकाशात, प्लास्टिकच्या पिशव्यांमध्ये किंवा रेफ्रिजरेटरमध्ये साठवणे, कारण या परिस्थितीमुळे ते फार टिकत नाहीत.
18	करा	ब्रेझा शेंडे पिकले पडू लागताना आणि गळून पडताने वेळा कापणी करा. साठवण्यापूर्वी कांदे काही दिवस शेतत बाळू घ्या. थंड, कोरळा, हवेगीर जागेत कांदे साठवा.

नोंद बरील माहिती मधून सामान्य सल्ले दिले आहेत. विशिष्ट प्रदेशाची संबंधित विशिष्ट शिफारसीसाठी कृष्या नुसच्या स्थानिक राख कृषी विभागाची संपर्क घ्या.

वेग्याणी काळजी पिकांच्या बांधीवर आणि उत्पादक विशिष्ट फटक परिणाम करू शकतात. म्हणून, नुसच्या स्थानिक कृषी अधिकाऱ्यांचा सल्ला घेण्याची शिफारस केली जाते. केवळ उच्च दर्जाचे खते आणि कीटकनाशके वापरणी जात आहेत याची खात्री करा. विभागे, खते आणि कीटकनाशके खरेदी करताना विल बाळगा.



ఉల్లిపాయలో - పాడించవలసిన ఆవరణల పాకెజి

శుభాకాంక్షలు క్రీస్టల్ కుటుంబము యొక్క అత్యంత ఉత్తమమైన ఉల్లిపాయ విత్తనాలి ఒకదానిని మీరు ఎంచుకున్నాడు. ఉత్తమ-నాణ్యత కలిగిన ఉల్లిపాయ విత్తనాలను ఉత్పత్తి చేయడములో క్రీస్టల్ కి చాలా అనుభవము వుంది. ఈ విత్తనాలు విస్తారముగా చేసిన పరిశోధన యొక్క ఫలితము, ఏటిని వివిధ వ్యవసాయ పాఠశాలలకు అనుకూలముగా అధిక-దిగుబడి ఇవ్వడమనే ఉద్దేశ్యముతో రూపొందించడము జరిగినది. రైతులకు అత్యధిక నాణ్యత కలిగిన విత్తనాలను అందించడానికి విత్తనాలను ఉత్పత్తి చేసే సమయములో క్రీస్టల్ ఆత్యాధునిక కృత్యాలు చేసిన పాటివుంది. క్రీస్టల్ ఉల్లిపాయ విత్తనాలు బయోటిక్ & ఎబయోటిక్ వత్తిడికి తట్టుకునే సామర్థ్యముతో అద్భుతమైన మొలకల్లే తత్వాలను & మెరుగైన బలమును కలిగివుంటాయి. అద్భుతమైన దిగుబడి కోరకు దయచేసి ఉత్తమమైన వ్యవసాయ ఆవరణలను పొందుచుండి. క్రింద సాధారణ సూచనలు ఇవ్వబడ్డాయి, కాబట్టి వైద్యులు నిర్దేశాలు తీసుకునే ముందు ఈ సూచనలను చదవాలని మేము మిమ్మల్ని అభ్యర్థిస్తున్నాము.

ఉల్లిపాయ పరిమాణం	మాపి, విరాటి	వేగ, రెడ్ అడ్వంజర్	గులాబీ, SPS గులాబీ						
కాలము పరిమాణం	85-120 DAS	85-90 DAS	100-110 DAS						
అల్లం	అవును	అవును	అవును						
రేటి	అవును	అవును	అవును						
పసంత కాలం	అవును	అవును	అవును						
నీటి పారుదల వసరు	వాన ఆధారము & నీరు పెట్టినది (డ్రైవ్, స్ప్రింకర్, వాన ఆధారిత హూస్ & ఉపరితల నీటి పారుదల)	వాన ఆధారము & నీరు పెట్టినది (డ్రైవ్, స్ప్రింకర్, వాన ఆధారిత హూస్ & ఉపరితల నీటి పారుదల)	వాన ఆధారము & నీరు పెట్టినది (డ్రైవ్, స్ప్రింకర్, వాన ఆధారిత హూస్ & ఉపరితల నీటి పారుదల)						

దయచేసి గమనించండి వాతావరణ పరిస్థితుల ఆధారముగా పంట ఎదుగుదల & పకకము కాలము మారవచ్చు

క్ర. సం.	వివరాలు/ఆవరణ/ఆవరణలు	ఆవరణ/వివరాలు. ఎకరానికి ఇస్తుంది
1	ప్రాంతము యొక్క అనుకూలత, వ్యవసాయ వాతావరణ జోన్	ఉష్ణోగ్రత: ఉల్లిపాయ చల్లని-వాతావరణము పంట ఇది పరిస్థితులకు తట్టుకుని నిలబడుతుంది మరియు కొంత వరకూ గడ్డకట్టే ఫలాలను తట్టుకుంటుంది. ఇది వసంత కాలము మరియు ఆకురాలు కాలములో బాగా ఎదుగుతుంది. 4.5 నుంచి 30°C వుండే మట్టి ఉష్ణోగ్రతలో ఉల్లిపాయ విత్తనాలు మొలకెత్తతాయి, దీనికి సరిపడిన ఉష్ణోగ్రత 18 నుంచి 24°C మధ్యలో వుంటుంది.
2	భూమి/మట్టి	లోతుగా వుండే మరియు బాగా-నిరు ఇంకేవి, లాజుగా వుండేవి, లోమ నుంచి ఇసుక మట్టి నెలలో ఉల్లిపాయ బాగా కాస్తుంది. ఉల్లిపాయ మట్టి pH 5.8 to 7.0 మధ్యలో వుండాలి, కానీ ఇది 7.6 pH వరకూ తట్టుకోగలదు.
3	కాలము, విత్త/నాటే సమయము	ఉత్పత్తి ప్రాంతాలని బట్టి విత్త సమయము మారుతుంది. శీతాకాలములో వాన పడే ప్రాంతాలలో, విత్తనాలను ఆగస్టు నుంచి మార్చి చివరి వరకూ నాటవచ్చు మరియు వేసవిలో చల్లగా వుండే ప్రాంతాలలో ఆగస్టు నుంచి మార్చి మధ్య వరకూ నాటవచ్చు.
4	విత్తనము రేటి, విత్త/నాటే పద్ధతి.	వేదజల్లే పద్ధతి - 3 నుంచి 4 కిలోలు/ఎకరానికి, మొక్కలను మళ్ళీ నాటే పద్ధతి - 1-1.5 కిలోలు/ఎకరానికి
5	ప్రధానమైన పొలముని తయారు చేయడము మరియు నాటడము	నెలను 15 to 20 cm లోతుగా దున్ని మట్టి వుండలను విడదీసి సీడ్ బెడ్లను బాగా తయారు చేయాలి. మట్టి ఎంత సమాంతరముగా వుంటే అంత వరకూ వుండండి, మంచి క్రమం ప్రకృతి సృష్టి మరియు సరిపడిన తేమ వుండాలి, మరియు కుళ్ళిన మొక్కల మెటిరయల్ లేకుండా చూసుకోండి.
6	ఖాళీ ఇవ్వడము	రో లోని మొక్కల మధ్య 10 నుంచి 15cm ఖాళీ వుండాలి, రో లు 15 నుంచి 20 cm దూరములో వుండాలి.
7	విత్త ముందు విత్తనముని శుద్ధి చేయడము	నాటే అన్ని విత్తనాలను ప్రవహించే నీటిలో కనిసము 2 గంటలు కడగండి. విత్తనాలను 0.5 % 2-మిథాక్విఇథైల్ట్రాక్లొరైడ్ క్లారిడ్ ద్రావకములో 20 నిమిషాలు నానబెట్టాలని సూచించడము జరిగినది. నానబెట్టిన విత్తనాలను నాటే ముందు కనిసము 6 గంటలు గది ఉష్ణోగ్రతలో ఎండ పెట్టండి.
8	ఎరువులు మరియు ఫర్టిలైజర్లు	సత్తజని ఫర్టిలైజర్ ముఖ్యమైనది మరియు మట్టి విశ్లేషణను బట్టి 120-160 కిలో/ఎకరానికి తడి సున్నము, అమోనియం నైట్రేట్ లేదా అమోనియం సల్ఫేట్ ని పంట పండించే సీజనులో 2 లేదా 3 క్రెస్టింగులు అప్లై చేయాలి. నాటే కాలములో ఎకరానికి/60 కిలోల సత్తజని అప్లై చేసారు మరియు మిగిలినది మొక్కలు 10 నుంచి 15 cm ఎత్తుకి వచ్చినప్పుడు అప్లై చేసారు. విత్త సరిగ్గా ముందు ఎకరానికి/200-240 కిలోల సూపర్ ఫాస్ఫేట్ మరియు ఎకరానికి/80-120 కిలోల పొటాషియం క్లారిడ్ మొత్తము మీద అప్లై చేసారు. ప్రత్యామ్నాయముగా, 400-480 కిలో/ఎకరానికి 2:3:2 (22) ఫర్టిలైజర్ మిక్చర్ అప్లై చేయండి. ఇవి సాధారణ సూచనలు మాత్రమే మరియు ఫర్టిలైజర్ అసలు ప్రమాణాలు మట్టి విశ్లేషణ మీద ఆధారపడతాయిని గమనించండి.
9	నీటి పారుదల పద్ధతులు	మట్టి ఎప్పుడూ పొడిగా అనుభవిస్తుంది మరియు దానిని 20 నుంచి 25 cm లోతు వరకూ తేమగా వుండేలా చూసుకోండి. విత్తలు నాటిన తరువాత వాటికి లోత మొలకలు వచ్చే వరకూ ప్రతి రోజూ ప్రతి రోజూ తేలికపాటిగా నీరు అందించండి, నీరు పెట్టినప్పుడు దాదాపుగా 30 mm నీటిని పెట్టాలి. మట్టి తేమలో పెద్ద స్థాయిలో మార్పులు జరిగితే అది సరిగ్గా ఏర్పడిన నాళి రకము వేళ్ళకి దారి తీస్తుంది మరియు చాలా వేళ్ళకి చిన్న చిన్న పిల్ల వేర్లు లేదా పక్క వేర్లు వుంటాయి.
11	కలుపు మొక్కలు తీయడము/అంతర్గత-కల్చివేషన్	ఉల్లిపాయ మొలకలతో కలుపు మొక్కలు పోటీపడి వాటి ఎదుగుదలలో అడ్డపడే లోపు వాటిని తొలగించాలి. రో ల మధ్యలోని అన్ని కలుపు మొక్కలను చేతితో తొలగించాలి తద్వారా అసలు మొక్కల వేళ్ళకి సఫలము కలుగుతుండా చేయవచ్చు. కలుపు మొక్కల నివారణకు రసాయన హార్మిసైడ్లను కూడా అప్లై చేయవచ్చు మరియు కంట్రీన్ మీద ఇచ్చిన సూచనలను ఖచ్చితముగా పాటించాలి.
12	సూక్ష్మజీవకాలు/ఎదుగుదల రెగ్యులేటర్ స్ప్రేలు	సూక్ష్మజీవకాలు మిక్చర్ స్ప్రే ఉల్లిపాయ ఎదుగుదలలను మరియు దిగుబడిని పెంచవచ్చు.
13	చీడ మరియు తెగులు కంట్రోల్	*పసు బంక: ఫ్లినకామిడ్ 50 % WG (0.5 గ్రాములు/లీటరు) *ఎర్ర సాటిలు: సిగ్మెటాఫెన్ 240 SC (1 ml/లీటరు) *సెర్టిఫైడ్ ఆకు మచ్చలు: కార్బెనడాజిమ్ (1 గ్రాము/లీటరు) తో క్రెంట్ చేయండి *డౌని బాజా తెగులు: టెబుకొనజోల్ 50% + ట్రైఫ్లోక్విథోజిమ్ 25% WG (లీటరుకి 0.5 to 1 గ్రాములు) లేదా క్లోథాలోనిల్ 75% WP 1.0 ml/లీటరు *స్కాబ్ & మొలకలు కుళ్ళు తెగులు: కార్బోథాజిమ్ (1 గ్రాము/లీటరు) తో క్రెంట్ చేయండి ఫ్లోములో తెగులు & చీడలు కంట్రోలు మీద అదనపు సమాచారము కోరకు, దయచేసి మీ స్థానిక వ్యవసాయ ఆఫీసర్లను సంప్రదించండి.
14	కోత	నాటి 100-120 రోజులలో పంట కోతకి వస్తుంది, కొన్ని తొందరగా పక్కానికి వచ్చే వంగడాలను 85-90 రోజులలో కోత కాయవచ్చు
15	ఆశించే దిగుబడి	సరైన పరిస్థితులలో బాగా మేనేజ్ చేసిన పంట నుంచి 8-10 టన్నుల దిగుబడి వస్తుంది.
16	ఫ్లోర్ చేయడము	వాటి పెల్చి లైఫ్ గరిష్ఠము చేయడానికి, ఉల్లిపాయలను చల్లని, పొడి, బాగా-గాలి వారే ప్రాంతములో ఫ్లోర్ చేయాలి. సరిపడిన ఉష్ణోగ్రత 7-13°C మధ్య వుండాలి
17	చేయకూడనివి	అలస్యముగా మళ్ళీ నాటడము, ఎక్కువ ఖాళీ ఇవ్వడము, అధికముగా ఫర్టిలైజర్లు ఇవ్వడము, అధికముగా నీరు పెట్టడము, నీరు నిలబడటము. ఉల్లిపాయలను నేరుగా సూర్యశుల్కం, ఫాస్ఫిక్ బాగులలో, లేదా రెసిజెరెటర్ పెట్టకూడదు, ఇలా చేయడము వాటి పెల్చి లైఫ్ ని తగ్గిస్తుంది.
18	చేయవలసినవి	ఉల్లిపాయ పున భాగము పనుషపవద్దు రంగుకి మారడము మరియు పడిపోవడము జరిగితే కోత మొదలు పెట్టండి. ఫ్లోర్ చేసే ముందు ఉల్లిపాయలను పొలములోనే కూర్చి అవ/దానికి కొన్ని రోజులు వుంచండి. ఉల్లిపాయలను చల్లని, పొడి, బాగా-గాలి వారే ప్రాంతములో ఫ్లోర్ చేయండి.
గమనిక	పైన చెప్పబడిన సమాచారము సాధారణ సలహాలు మాత్రమే. ప్రత్యేక ప్రాంతాలకి సంబంధించిన ప్రత్యేకమైన సూచనల కోరకు, దయచేసి మీ రాష్ట్ర స్థానిక వ్యవసాయ శాఖను సంప్రదించండి.	
జాగ్రత్తలు	పంటల ఎదుగుదల మరియు దిగుబడి పలు కారణాల వలన ప్రభావితము అవుతుంది. కాబట్టి, మీ స్థానిక వ్యవసాయ అధికారిని సలహా కోరకు సంప్రదించాలని సూచించడము జరిగింది. కేవలము అధిక-నాణ్యత కలిగిన ఫర్టిలైజర్లు మరియు కీటకనాశనులు మాత్రమే ఉపయోగించబడ్డాయని దృఢీకరించుకోండి. విత్తనాలు, ఫర్టిలైజర్లు మరియు కీటకనాశనుల కొనుగోలు బిల్లులను మీ పద్ధి వుంచుకోండి.	



வெங்காயம் - பயிரிடுதலுக்கான வழிகாட்டுதல்கள் மற்றும் தொழில்நுட்பங்கள்

வாழ்த்துக்கள் கிரீஸ்டல் குடும்பத்தில் இருந்து மிகச் சிறந்த வெங்காயம் விதைகளில் ஒன்றைத் தேர்வு செய்துள்ளீர்கள். உயர் தர வெங்காயம் விதைகள் தயாரிப்பில் கிரீஸ்டல் திறுவனம் மிகச் சிறந்த அனுபவம் கொண்டது. இந்த விதைகள் பரவலான விவசாயக் காலநிலைகளுக்கு பொருத்தும் வகையில், அதிக மக்தல் தரும் கலப்பு பயிர்களை உருவாக்குவதற்கான சிறந்த ஆராய்ச்சியின் விளைவு ஆகும். கிரீஸ்டல், விவசாயிகள் மிக உயர் தரமான விதைகளைப் பெறுவதை உறுதி செய்வதற்காக விதை தயாரிப்பின் பொது நவீன தொழில்நுட்பங்களைப் பயன்படுத்துகிறது. கிரீஸ்டல்-வின் வெங்காயம் விதைகள் உயிரி சார் & உயிரி சாரா தழுவல்களில் தாக்கு பிடிக்கும் வகையில் மிகச் சிறந்த முறைதல் & வலமை கொண்டவை. மிகச் சிறந்த மக்தலைப் பெற சிறந்த விவசாய நடைமுறைகளை மேற்கொள்ளுங்கள். பின்வரும் பொதுவான பரிந்துரைகள் வழங்கப்பட்டுள்ளது. எனவே, ஏதேனும் முடிவுகளை மேற்கொள்ளும் முன் இந்தப் பரிந்துரைகளைப் படிக்குமாறு கேட்டுக்கொள்கிறோம்.

வெங்காய வகை	மாஹி, விளாட	மாஹி, ரெட் அட்லாண்டிக், SPS வெளா, வேளா, விளா, விளாட	இந்தஸ் குலாபி, இந்தஸ் ரெட் ரெட், கட்டைவர், SPS குலாபி, SPS ரெட்						
காலம்	110-120 DAS	85-90 DAS	100-110 DAS						
கார்ப் ராபி	ஆம்	ஆம்	ஆம்						
வசந்த காலம்	ஆம்	ஆம்	ஆம்						
பாசன ஆதாரம்	மழைப்பொழிவு & பாசனம் (சொட்டு, தெளிப்பு, மழை குழாய் வழி அல்லது மேற்பரப்பு பாசனம்)	மழைப்பொழிவு & பாசனம் (சொட்டு, தெளிப்பு, மழை குழாய் வழி அல்லது மேற்பரப்பு பாசனம்)	மழைப்பொழிவு & பாசனம் (சொட்டு, தெளிப்பு, மழை குழாய் வழி அல்லது மேற்பரப்பு பாசனம்)						

வானிலை தழுவல்களைப் பொறுத்து பயிர் வளர்ச்சி & முதிர்ச்சி மாறுபடலாம் என்பதைக் கவனத்தில் கொள்ளுங்கள்

வ.எண்	விவரங்கள் / செயல்பாடுகள் / செய்முறை	செயல்முறைக்கான விவரங்கள். ஒரு ஏக்கருக்கான உர உள்ளீடு
1	பொருத்துகின்ற பரப்பளவு விவசாய காலநிலை மண்டலம்	பெய்நிலை வெங்காயம் என்பது கடினமான மற்றும் உறைதலைத் தாங்கும் ஒரு குளிர் கால பயிர். வசந்த காலம் மற்றும் இலையுதிர் காலத்தில் நன்கு வளர்கிறது. வெங்காய விதைகள், மண் வெப்பநிலைகளை 4.5 to 30°C முனைக்கின்றன. சாதகமான வெப்பநிலை என்பது 18 to 24 °C ஆகும்.
2	நிலம் / மண்	வெங்காயம் ஆழமான மற்றும் நிரீ தேங்காத, தளர்வான, பசுமை முதல் மணற்பாசங்களான மண் வரை நன்றாக வளர்கிறது. வெங்காயத்திற்கு 5.8 முதல் 7.0 pH உள்ள மண் ஏற்றது. ஆனால், வெங்காயத்தால் 7.6 pH வரை தாக்கு பிடிக்க முடியும்.
3	பருவம், விதைத்தல்நாற்று நடுவதற்கான நேரம்	விதைக்கும் நேரங்கள் உற்பத்தி பகுதிகளைப் பொறுத்து மாறுபடலாம். குளிர்கால மழை பகுதிகளில், விதைகளை ஆகஸ்ட் முதல் மார்ச் இறுதி வரை மற்றும் ஆகஸ்ட் இறுதி முதல் மார்ச் மாதத்தின் நடுப்பகுதி வரை குளிர்வான வெயில் காலத்தில் விதைக்கலாம்.
4	விதை விசிதம், விதைத்தல்நாற்று நடும் முறை	விதை தரவல் முறை - ஏக்கருக்கு 3 முதல் 4 கிலோ, பதியம் பொருள் முறை - ஏக்கருக்கு 1-15 கிலோ
5	பிரதான நிலம் மற்றும் நாற்று நடுவதற்கான தயாரிப்பு	விதை படுக்கை மண் கட்டிகளை உடனடி அளவிற்கு 15 முதல் 20 செ.மீ ஆழத்திற்கு உழுது நன்கு தயாரிக்கப்பட வேண்டும். மண் ஆனது சமப்படுத்தப்பட்டு, ஒரு தல்ல துகள் அமைப்பின் பொதுமான ஈரப்பதம் மற்றும் அழுக்க அற்ற தாவரப் பொருள் இல்லாமல் இருக்க வேண்டும்.
6	இடைவெளி	ஒரு வரிசையில் தாவரங்களுக்கு இடையில் 10 முதல் 15 செ.மீ இடைவெளியும், 15 முதல் 20 செ.மீ இடைவெளியில் வரிசைகள் அமைக்கப்பட்டு இருக்க வேண்டும்.
7	விதைப்பதற்கு முன்பான விதை தயாரிப்பு	நட்பட்ட அனைத்து விதைகளும் ஒடுகின்ற நீரில் குறைந்தது 2 மணிநேரங்கள் கழுவப்பட வேண்டும். விதைகளை 0.5% 2-மீதாக்கிரீத்தில்மெர்குரி குளோரைடு கரைசலில் 20 நிமிடங்கள் ஊற வைப்பது பரிந்துரைக்கப்படுகிறது. விதைப்பிற்கு முன், ஊற வைக்கப்பட்ட விதைகள் குறைந்தது 6 மணி நேரம் அறை வெப்ப நிலையில் காய வைக்கப்படுகிறது.
8	ஏக்கர்கள் மற்றும் உரங்கள்	சைட்ரஸ் உரமிடுதல் முக்கியம் மற்றும் மண் பகுப்பாய்வைப் பொறுத்து வளர் பருவத்தில், ஏக்கருக்கு 120-160 கிலோ கண்ணாடி, அம்மோனியம் சைட்ரேட் அல்லது அம்மோனியம் சல்பேட், 2 அல்லது 3 தடவை பொட்படுகின்றன. பொதுவாக, நடவு செய்யும் நேரத்தில் ஏக்கருக்கு 60 கிலோ சைட்ரேட் சேம்பர் பொட வேண்டும் மற்றும் மீதுமுள்ளைநாற்று தாவரங்கள் 10 முதல் 15 செ.மீ உயரம் வளர்ந்த பின் பொட வேண்டும். பொதுவாக, விதைப்பை விதைக்கும் முன் ஏக்கருக்கு 200-240 கிலோ நூபர் பாஸ்பேட் மற்றும் ஏக்கருக்கு 80-120 கிலோ பொட்டாசியம் குளோரைடு பொட வேண்டும். மாறாக, ஏக்கருக்கு 400-480 கிலோ ஒரு 2:3:2 (22) உரக் கலவை பொடப்படலாம். இவை எல்லாம் பொதுவான பரிந்துரைகள் என்பதைக் கவனத்தில் கொள்ள வேண்டும் மற்றும் உண்மையான உரத்தின் அளவுகள் மண் பகுப்பாய்வின் அடிப்படையில் இருக்க வேண்டும்.
9	பாசன அட்டவணை	மண் உலர்வாக விடக் கூடாது மற்றும் மண்ணை 20 முதல் 25 செ.மீ ஆழத்திற்கு ஈரப்பதமாக வைத்திடு வேண்டும். இம் தாவரங்கள் முளைக்கும் வரை விதைகளுக்கு அன்றாடம் குறைவான அளவில் நீர் பாசன வேண்டும். ஒரு பாசனத்தில் 30 மில்லிமீட்டர் அளவிலான நீர் அளிக்கப்பட வேண்டும். மண் ஈரப்பத உள்ளடக்கம் பெரிதாக மாறுபட்டால் மோசமான தரம் கொண்டு, வேர்களுக்கு வழிவகுக்கலாம். அது மோசமாகலாம் மற்றும் அதிக சிறிய முடிவுகள் அல்லது பக்க வேர்களைக் கொண்டிருக்கலாம்.
11	களை நீக்கல்; ஊடு பயிரிடுதல்	வெங்காய நாற்றுக்குள் களைகள் பொடி, பொருவதைக் கட்டுப்படுத்த வேண்டும் மற்றும் நாற்றுக்குள் களைகள் இடைவினை பரிவதைத் தடுக்க வேண்டும். வேர்கள் சேதம் அடைவதைத் தவிர்க்க, வேர்களுக்கு இடையில் உள்ள அனைத்து களைகளும் கையால் அகற்றப்பட வேண்டும். களை கட்டுப்பாடு வேதியியல் முறையில் களைகொல்லிகள் வாயிலாக செய்யலாம் மற்றும் கொள்கலனில் உள்ள அறிவுரைகளைச் சிறப்பாகப் பின்பற்றப்பட வேண்டும்.
12	நுள் ஊட்டச்சத்துவளர்ச்சியை ஒழுங்குபடுத்தும் தெளிப்புகள்	நுள்ளுட்டங்கள் கலப்பு தெளிப்பு வெங்காய வளர்ச்சி மற்றும் மக்தலை அதிகரிக்கலாம்.
13	பூச்சி மற்றும் நோய் கட்டுப்பாடு	செடிப்பெள்கள் : பீனோலிகாமிட் 50% WG (லிட்டருக்கு 0.5 கிராம்) சிலப்பு சிலத்தி ஸ்போரோமைசி-பென் 240 SC (லிட்டருக்கு 1 மில்லி) செர்கோஸ்போரோ இலை புளூசி கார்பண்டாசிம் (லிட்டருக்கு 1 கிராம்)-ல் முக்குங்கள் அடிச்சம்பல் நோய் பெடிகோனோசோல் 50% + டிசோ-பீனோக்ஸிஸ்டீரோயிட் 25% WG (0.5-1 கிராம்லிட்டர்) அல்லது குளோரோத்திரோனில் 75% WP 1.0 மில்லிமீட்டர் ஸ்டேப் & டெம்பிங் ஆஃப் கார்பண்டாசிம் (லிட்டருக்கு 1 கிராம்)-ல் முக்குங்கள் நிலத்தில் பூச்சிகள் & நோய் தடுப்பு பற்றி மேலும் அறிய உங்கள் உள்ளூர் விவசாய அலுவலர்களுடன் ஆலோசியங்கள்.
14	அறுவடை	விதைத்த 100-120 நாட்களில் பயிர் அறுவடைக்கு தயாராகிவிடுகிறது. சில முந்தைய வகைகள் 85-90 நாட்களில் அறுவடை செய்யலாம்.
15	எதிர்சார்ப்படும் மக்தல்	சாதகமான நிலைகளில் ஒரு நன்கு பராமரிக்கப்பட்ட பயிர் 8-10 டன் மக்தலை அளிக்கிறது.
16	சேமிப்பகம்	அறை வாழ்நாளை அதிகரிக்க, வெங்காயங்களை ஒரு குளிர்வான, உலர்வான, காற்றோட்டம் உள்ள பகுதியில் சேமித்து வைக்க வேண்டும். சாதகமான வெப்பநிலை 7-13°C
17	செய்ப்பக்கடாதவை	தாமதமான பதியம் பொடுதல், அதிக இடைவெளி, கூடுதல் உரங்கள், அதிக நீர் பாசனம், நீர் தேங்குதல், வெங்காயங்களை நேரடி சூரிய ஒளி, பிளாஸ்டிக் பைகள் அல்லது குளிர்சாதனப் பெட்டியில் வைப்பது போன்ற நிலைகள் வெங்காயத்தின் வாழ்நாளைக் குறைத்துவிடலாம்.
18	செய்ய வேண்டியவை	மேற்பகுதி மஞ்சளாகி விடும் பொது அறுவடைகைச் செய்யுங்கள். சேமிப்பதற்கு முன் ஒரு சில நாட்களுக்கு நிலத்திலேயே வெங்காயம் பல்புகளை முதிர் வைத்திடுங்கள். வெங்காயங்களை ஒரு குளிர்ந்த, உலர்வான, காற்றோட்டமான இடத்தில் சேமித்து வைக்க வேண்டும்.
குறிப்பு	மேற்கண்ட தகவல் ஒரு பொதுவான அறிவுறுத்தல். குறிப்பிட்ட பகுதிகளை தனிப்பட்ட பரிந்துரைகளுக்கு, உங்களது மாநிலத்தில் இருக்கும் உள்ளூர் விவசாயத் துறையைத் தொடர்பு கொள்ளுங்கள்.	
முன்பெச்சரிக்கை நடவடிக்கைகள்	பல்வேறு காரணிகளால், பயிர் வளர்ச்சி மற்றும் மக்தல் பாதிக்கப்படலாம். எனவே, ஆலோசனைக்காக உங்கள் உள்ளூர் விவசாய அலுவலரைச் சந்தித்து பெகவுது பரிந்துரைக்கப்படுகிறது. உயர் தர உரங்கள் மற்றும் பூச்சிக்கொல்லிகள் மட்டுமே பயன்படுத்தப்படுகின்றன என்பதை உறுதி செய்யுங்கள். விதைகள், உரங்கள் மற்றும் பூச்சிக்கொல்லிகள் வாய்க்கிய ரீதியாக சேமிக்கப்படும் தக்க வைத்துக்கொள்ளுங்கள்.	



ਪਿਆਰ ਦੀ ਕਾਬਜ਼ ਦੇ ਤਰੀਕੇ

ਦਾਦੀਆਂ ਹੋਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਪਹਿਲਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਪਿਆਰ ਦੇ ਬੀਜਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਬੀਜ ਚੁਣਿਆ ਹੈ। ਪਿਆਰ ਨੂੰ ਚੋਣ ਕਰਨਾ ਵਧੀਕ ਖਰਚੇ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਹ ਬੀਜ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਵਧ ਰਹੇ ਮੌਸਮਾਂ ਲਈ ਵਾਧੂ ਉੱਚ-ਉੱਚ ਦੇਣ ਵਾਲੀਆਂ ਹਾਰੀਫਿਡ ਕਾਲਾਂ ਬਣਾਉਣ ਦੇ ਉੱਚੇ ਨਾਲ ਵਿਆਪਕ ਖੋਜ ਦਾ ਨਤੀਜਾ ਹੈ। ਪਿਆਰ ਬੀਜ ਦੇ ਉਤਪਾਦਨ ਦੌਰਾਨ ਨਵੀਨਤਮ ਤਕਨੀਕੀ ਅਪਣਾਉਂਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਕਿ ਇਹ ਗੱਲ ਯਕੀਨੀ ਬਣਾਈ ਜਾ ਸਕੇ ਕਿ ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਕੁਣਵੰਤ ਵਾਲੇ ਬੀਜ ਮਿਲ ਸਕਣ। ਪਿਆਰ ਦੇ ਬੀਜਾਂ ਵਿੱਚ ਉਗਣ ਦੀ ਉੱਚ ਸਮਰੱਥਾ, ਬੁਟਿਆਂ ਦਾ ਮਜ਼ਬੂਤ ਵਿਕਾਸ ਅਤੇ ਰੋਗ ਅਤੇ ਵਾਰਾਵਰ ਦੇ ਤਣਾਅ ਪ੍ਰਤੀ ਚੰਗੀ ਸਹਿਣਸ਼ੀਲਤਾ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਚੰਗੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਖੇਤੀ ਅਭਿਆਸਾਂ ਦਾ ਪਾਲਣ ਕਰੋ। ਹੇਠਾਂ ਕੁਝ ਮੁੱਖ ਸਲਾਹਾਂ ਦਿੱਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ, ਜਿਸ ਲਈ ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਖੇਤੀ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਕੋਈ ਵੀ ਫੈਲਾ ਲੈਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹੋ।

ਪਿਆਰ ਦੀ ਕਿਸਮ	ਮਾਧੀ ਮਾਧੀ ਵਿਰਟ ਵਿਰਟ	ਰੋਡ Admiral ਏਸਪੀਏਸ ਵੇਕਾ ਵੇਕਾ ਵੀਕਾ	ਇੰਡਸ ਕ੍ਰਾਈਮੀ ਰੋਡ ਏਡਮਾਏਰ ਏਸਪੀਏਸ ਕ੍ਰਾਈਮੀ ਏਸਪੀਏਸ ਰੋਡ
ਮਿਆਦ ਮਗਰੋਂ ਲਾਭੀ ਸਮੱਗਰੀ	110-120 DAS	85-90 DAS	100-110 DAS
ਸਿੰਚਾਈ ਦਾ ਸਰੋਤ	ਮੌਜੂਦਾ 'ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਅਤੇ ਸਿੰਚਾਈ ਵਾਲਾ ਖੇਤਰ (ਟਿੱਪ, ਸਮੁੱਕਲਰ, ਮੌਜੂਦਾ ਨਾਲ ਚੱਲਣ ਵਾਲੀ ਪਾਈਪ ਅਤੇ ਸਤਹੀ ਸਿੰਚਾਈ)	ਮੌਜੂਦਾ 'ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਅਤੇ ਸਿੰਚਾਈ ਵਾਲਾ ਖੇਤਰ (ਟਿੱਪ, ਸਮੁੱਕਲਰ, ਮੌਜੂਦਾ ਨਾਲ ਚੱਲਣ ਵਾਲੀ ਪਾਈਪ ਅਤੇ ਸਤਹੀ ਸਿੰਚਾਈ)	ਮੌਜੂਦਾ 'ਤੇ ਨਿਰਭਰ ਅਤੇ ਸਿੰਚਾਈ ਵਾਲਾ ਖੇਤਰ (ਟਿੱਪ, ਸਮੁੱਕਲਰ, ਮੌਜੂਦਾ ਨਾਲ ਚੱਲਣ ਵਾਲੀ ਪਾਈਪ ਅਤੇ ਸਤਹੀ ਸਿੰਚਾਈ)

ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਪਿਆਰ ਦਿੱਤੇ ਕਿ ਫਸਲ ਦਾ ਵਾਧਾ ਅਤੇ ਪਹਿਲਕਤਾ ਮੌਸਮ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਸੀਰੀਅਲ ਨੰ.	ਵੇਰਵੇ/ਕਾਰਜ/ਅਭਿਆਸ	ਕੌਮਕਾਰਜ ਦੇ ਵੇਰਵੇ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਵਿਸਥਾਰ
1	ਖੇਤਰ ਲਈ ਅਨੁਕੂਲਤਾ। ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਜਲਵਾਯੂ ਖੇਤਰ	ਤਾਪਮਾਨ: ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਠੰਡੇ ਤੋਂ ਗਰਮ ਹੋਣ ਤੱਕ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਕ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਕ ਬੀਜਾਂ ਅਤੇ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਵਧੀਕ ਬੀਜਾਂ ਦਾ ਬੀਜ ਸਮਾਂ ਤੋਂ ਤਾਪਮਾਨ 18°C ਤੋਂ ਉੱਚਾ ਹੋਣਾ, ਜਿਸ ਦਾ ਅਨੁਕੂਲ ਤਾਪਮਾਨ 18 ਤੋਂ 24°C ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
2	ਜ਼ਮੀਨ / ਮਿੱਟੀ	ਪਿਆਰ ਡੂੰਘੀ ਅਤੇ ਚੰਗੀ ਨਿਕਾਸ ਵਾਲੀ, ਢਿੱਲੀ, ਏਮਟ ਤੋਂ ਰੇਤਲੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਕ ਉੱਗਦੇ ਹਨ। ਪਿਆਰ 5.8 ਤੋਂ 7.0 ਦੇ pH ਵਾਲੀ ਮਿੱਟੀ ਨੂੰ ਤਰਜੀਹ ਦਿੰਦੇ ਹਨ, ਪਰ 7.6 ਤੱਕ pH ਨੂੰ ਵੀ ਸਹਿ ਸਕਦੇ ਹਨ।
3	ਮੌਸਮ। ਬਿਜਾਈ/ਲਗਾਉਣ ਦਾ ਸਮਾਂ	ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ ਉਤਪਾਦਨ ਖੇਤਰ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਸਰਦੀਆਂ ਦੀ ਬਾਰਿਸ਼ ਵਾਲੇ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ, ਬੀਜ ਅਗਸਤ ਤੋਂ ਮਾਰਚ ਦੇ ਆਖਰ ਤੱਕ ਬੀਜੇ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਗਰਮੀਆਂ ਦੀ ਠੰਡੀ ਬਾਰਿਸ਼ ਵਾਲੇ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ, ਬੀਜ ਅਗਸਤ ਦੇ ਆਖਰ ਤੋਂ ਮਾਰਚ ਦੇ ਮੱਧ ਤੱਕ ਬੀਜੇ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ।
4	ਬੀਜ ਦੀ ਦਰ। ਬਿਜਾਈ/ਲਾਉਣ ਦਾ ਤਰੀਕਾ।	ਬੌਫਕਾਸਟਿੰਗ ਦਾ ਤਰੀਕਾ - 3 ਤੋਂ 4 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ / ਏਕੜ, ਪਨੀਕੀ ਲਗਾਉਣ ਦਾ ਤਰੀਕਾ - 1 - 1.5 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ / ਏਕੜ
5	ਮੁੱਖ ਖੇਤ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਅਤੇ ਬਿਜਾਈ	ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਲਈ ਜ਼ਮੀਨ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤਿਆਰ ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ, 15 ਤੋਂ 20 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਡੂੰਘੀ ਵਾਰ ਖੋਦੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਨਿੱਕਾ ਸੰਭਵ ਹੋ ਸਕੇ ਪੱਧਰੀ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ, ਚੰਗੀ ਬਣਤਰ ਅਤੇ ਨਮੀ ਵਾਲੀ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ, ਅਤੇ ਸਤਨ ਵਾਲੇ ਬੂਟਿਆਂ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।
6	ਬੁਟਿਆਂ ਵਿਚਕਾਰ ਦੂਰੀ	ਠੀਕ ਕਤਾਰ ਵਿੱਚ ਬੁਟਿਆਂ ਵਿਚਕਾਰ 10 ਤੋਂ 15 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਅਤੇ ਕਤਾਰਾਂ ਵਿਚਕਾਰ 15 ਤੋਂ 20 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਦੂਰੀ ਰੱਖੋ।
7	ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਬੀਜ ਦਾ ਉਪਚਾਰ	ਲਗਾਏ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਸਾਰੇ ਬੀਜਾਂ ਨੂੰ ਘੱਟੋ-ਘੱਟ 2 ਘੰਟਿਆਂ ਲਈ ਵਗਣੇ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਧੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਬੀਜਾਂ ਨੂੰ 0.5% 2-ਮੈਥੋਕਸਾਈਥਾਈਲਮਰਕਰੀ ਕਲੋਰਾਈਡ ਦੇ ਘੋਲ ਵਿੱਚ 20 ਮਿੰਟਾਂ ਲਈ ਡੁਬੋ ਕੇ ਰੱਖਣ ਦੀ ਸਿਫਾਰਸ਼ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਡਿੱਬੇ ਹੋਏ ਬੀਜਾਂ ਨੂੰ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਘੱਟੋ-ਘੱਟ 6 ਘੰਟੇ ਪਹਿਲਾਂ ਕਮਰ ਦੇ ਤਾਪਮਾਨ 'ਤੇ ਸੁਕਾਇਆ ਜਾਣਾ ਹੈ।
8	ਜੈਵਿਕ ਅਤੇ ਰਸਾਇਣਕ ਖਾਦ	ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ ਖਾਦ ਪਾਉਣੀ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਅਤੇ ਮਿੱਟੀ ਦੇ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ, 120-160 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਚੂਨਾ ਪੱਥਰ, ਅਮੋਨੀਅਮ ਨਾਈਟ੍ਰੇਟ ਜਾਂ ਅਮੋਨੀਅਮ ਸਲਫੇਟ ਵਧ ਰਹੇ ਮੌਸਮ ਦੌਰਾਨ 2 ਜਾਂ 3 ਵਾਰ ਪਾਇਆ ਜਾਣਾ ਹੈ। ਅਕਸਰ ਬਿਜਾਈ ਸਮੇਂ 60 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ/ਏਕੜ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ ਪਾਇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਕਿ ਬਾਕੀ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਬੂਟੇ 10 ਤੋਂ 15 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਉਚਾਈ 'ਤੇ ਪਹੁੰਚਣ 'ਤੇ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕੁੱਲ 200-240 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ/ਏਕੜ ਸੁਪਰਫਾਸਫੇਟ ਅਤੇ 80-120 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ/ਏਕੜ ਪੋਟਾਸ਼ੀਅਮ ਕਲੋਰਾਈਡ ਪਾਇਆ ਜਾਣਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ, 2.3:2 (2:2) ਦਾ ਖਾਦ ਮਿਸ਼ਰਣ 400-480 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ/ਏਕੜ 'ਤੇ ਲਗਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਪਿਆਰ ਵਿੱਚ ਚੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਆਮ ਸਿਫਾਰਸ਼ਾਂ ਹਨ, ਜਦੋਂ ਕਿ ਖਾਦ ਦੀ ਸਹੀ ਮਾਤਰਾ ਮਿੱਟੀ ਦੇ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਤੈਅ ਕੀਤੀ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।
9	ਸਿੰਚਾਈ ਦੀ ਸਮਾਂ-ਸਾਰੀ	ਮਿੱਟੀ ਨੂੰ ਕਦੇ ਵੀ ਸੁੱਕਣ ਨਹੀਂ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਅਤੇ ਇਸਨੂੰ 20 ਤੋਂ 25 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਡੂੰਘਾਈ ਤੱਕ ਨਮ ਰੱਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਤੱਕ ਛੋਟੇ ਬੂਟੇ ਵੱਡੇ ਨਹੀਂ ਹੋ ਜਾਂਦੇ, ਬੁਟਿਆਂ ਨੂੰ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਹਲਕਾ ਜਿਹਾ ਪਾਣੀ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਤੀ ਸਿੰਚਾਈ ਲਗਭਗ 30 ਮਿਲੀਮੀਟਰ ਪਾਣੀ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਨਮੀ ਵਿੱਚ ਵੱਡਾ ਬਦਲਾਅ ਆਉਂਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਜੜ੍ਹਾਂ ਵਿਗੜ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਉੱਤੇ ਛੋਟੀ ਜੂ ਜਾਂ ਅਚਾਨਕ ਜੜ੍ਹਾਂ ਉੱਭਰ ਆਉਂਦੀਆਂ ਹਨ।
11	ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਕਟਾਈ ਅਤੇ ਫਸਲਾਂ ਦੀ ਕਾਸ਼	ਪਿਆਰ ਦੇ ਬੂਟੇ ਦੇ ਉੱਗਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ ਨਸ਼ਟ ਕਰ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਜੋ ਉਹ ਇਸਦੇ ਵਾਧੇ ਵਿੱਚ ਰੁਕਾਵਟ ਨਾ ਬਣਨ। ਜੜ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਨੁਕਸਾਨ ਪਹੁੰਚਾਏ ਬਿਨਾਂ ਕਤਾਰਾਂ ਵਿਚਕਾਰਲੇ ਸਾਰੇ ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ ਹੱਥ ਨਾਲ ਹਟਾਉਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ ਰਸਾਇਣਕ ਢੰਗ ਨਾਲ ਵੀ ਕਟੋਰਲ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਨਦੀਨਾਸ਼ਕਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰੋ ਅਤੇ ਡੱਬੇ 'ਤੇ ਦਿੱਤੀਆਂ ਹਿਦਾਇਤਾਂ ਦਾ ਪਾਲਣ ਕਰੋ।
12	ਪੋਸਟਿਕ ਤੌਤਾ/ਵਿਕਾਸ ਰੈਗੂਲੇਟਰਾਂ ਦਾ ਫਿਤਰਾਅ	ਸ਼ੂਮ ਪੋਸਟਿਕ ਤੌਤਾ ਦੇ ਮਿਸ਼ਰਣ ਦਾ ਸਪਰੇਅ ਪਿਆਰ ਦੇ ਵਾਧੇ ਅਤੇ ਝਾੜ ਨੂੰ ਵਧਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।
13	ਕੀਟ ਅਤੇ ਰੋਗ ਨਿਰੰਤਰਤਾ	ਐਂਟੀਬਾਇਓਟਿਕ 50% WG (0.5 ਗ੍ਰਾਮ/ਲੀਟਰ) ਲਾਲ ਮਕੜੀ: ਸਪਾਈਰੋਮੈਥਿਨ 240 SC (1 ਮਿ.ਲੀ./ਲੀਟਰ) ਸੁਕਰੋਸਪੋਰਾ ਲੀਟ ਸਪਾਟ. ਕਾਰਬੋਥਾਜਿਮ (1 ਗ੍ਰਾਮ/ਲੀਟਰ) ਦਾ ਫਿਤਰਾਅ ਕਰੋ ਫਾਊਂਡੀ ਫਲੂਈ: ਟੈਬੁਕੋਨਾਜੋਲ 50% + ਟ੍ਰਾਈਫਲੋਕਸੀਮੈਟ੍ਰੋਕਿਨ 25% WG (0.5 ਤੋਂ 1 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਲੀਟਰ) ਜਾਂ ਕਲੋਰੋਥੈਲੇਨਿਲ 75% WP 1 ਮਿ.ਲੀ./ਲੀਟਰ ਸਰੋਕ ਅਤੇ ਟੈਮਿੰਗ ਆਰ. ਕਾਰਬੋਥਾਜਿਮ (1 ਗ੍ਰਾਮ/ਲੀਟਰ) ਨਾਲ ਡੂੰਘਿੰਗ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਬਿਮਾਰੀ ਅਤੇ ਨਿਰੰਤਰਤਾ ਖਾਰੇ ਵਧੇਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਲਈ, ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਸਥਾਨਕ ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਅਧਿਕਾਰੀ ਦੀ ਸਲਾਹ ਲਓ।
14	ਵਾਢੀ	ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 100-120 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਫਸਲ ਕਟਾਈ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਕੁਝ ਅਗ਼ੀਤੀਆਂ ਕਿਸਮਾਂ 85-90 ਦਿਨਾਂ ਵਿੱਚ ਕੱਟੀ ਜਾ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ।
15	ਅਨੁਮਾਨਿਤ ਝਾੜ	ਸਹੀ ਹਾਲਤਾਂ ਵਿੱਚ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪ੍ਰਬੰਧਿਤ ਫਸਲ 8-10 ਟਨ ਪੈਦਾਵਾਰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ।
16	ਸਟੋਰੇਜ਼	ਪਿਆਰ ਦੀ ਸੈਲਫ ਲਈ ਵਧਾਉਣ ਲਈ, ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਠੰਡੀ, ਸੁੱਕੀ ਅਤੇ ਹਵਾਦਾਰ ਜਗ੍ਹਾ 'ਤੇ ਸਟੋਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਆਦਰਸ਼ ਤਾਪਮਾਨ 7-13°C ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ ਹੈ।
17	ਕੀ ਨਾ ਕਰੋ	ਦੇਰ ਨਾਲ ਡੋਪਾਈ, ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਦੂਰੀ, ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਖਾਦ, ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪਾਣੀ, ਪਾਣੀ ਦਾ ਜਮਾਵ। ਪਿਆਰ ਨੂੰ ਸਿੱਧੀ ਸੂਰਜ, ਪਲਾਸਟਿਕ ਦੀਆਂ ਬੈਲੀਆਂ ਜਾਂ ਫਲਿੱਜ ਵਿੱਚ ਨਾ ਸਟੋਰ ਕਰੋ, ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਸਥਿਤੀਆਂ ਪਿਆਰ ਦੀ ਸੈਲਫ ਲਈ ਖਾਦ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ।
18	ਕੀ ਕਰੋ	ਜਦੋਂ ਉੱਪਰੀ ਰਿਸੇ ਪੀਲੇ ਹੋ ਕੇ ਡਿੱਗਣ ਲੱਗ ਪੈਣ ਤਾਂ ਵਾਢੀ ਕਰੋ। ਪਿਆਰ ਨੂੰ ਸਟੋਰ ਕਰਨ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕੁਝ ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੁਕਾ ਲਓ। ਪਿਆਰ ਨੂੰ ਠੰਡੀ, ਸੁੱਕੀ ਅਤੇ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹਵਾਦਾਰ ਜਗ੍ਹਾ 'ਤੇ ਸਟੋਰ ਕਰੋ।
ਨੋਟ	ਇਹ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਿਰਫ ਆਮ ਜਾਣਕਾਰੀ ਲਈ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਖਾਸ ਖੇਤਰ ਲਈ ਖਾਸ ਸਿਫਾਰਸ਼ਾਂ ਲਈ, ਕਿਰਪਾ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਸਥਾਨਕ ਰਾਜ ਦੇ ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਵਿਭਾਗ ਨਾਲ ਸੰਪਰਕ ਕਰੋ।	
ਸਾਵਧਾਨੀਆਂ	ਕਈ ਕਾਰਨਾਂ ਕਰਕੇ ਫਸਲਾਂ ਦਾ ਵਾਧਾ ਅਤੇ ਝਾੜ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ, ਸਲਾਹ ਲਈ ਆਪਣੇ ਸਥਾਨਕ ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਅਧਿਕਾਰੀ ਨਾਲ ਗੱਲ ਕਰਨ ਦੀ ਸਲਾਹ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਯਕੀਨੀ ਬਣਾਓ ਕਿ ਸਿਰਫ ਚੰਗੀ ਕੁਆਲਿਟੀ ਦੀਆਂ ਖਾਦਾਂ ਅਤੇ ਕੀਟਨਾਸ਼ਕਾਂ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ। ਬੀਜ, ਖਾਦ ਅਤੇ ਕੀਟਨਾਸ਼ਕਾਂ ਦੀ ਖਰੀਦ ਦੇ ਬਿਨਾਂ ਨੂੰ ਸੰਭਾਲ ਕੇ ਰੱਖੋ।	

পেঁয়াজ - চাষের নিয়মাবলি

অভিনন্দন! আপনি ক্রিস্টাল পরিবারের অন্যতম উৎকৃষ্ট পেঁয়াজের বীজগুলি নির্বাচন করেছেন। উচ্চমানের পেঁয়াজ বীজগুলি উপাদানে ক্রিস্টালের নির্ভরযোগ্য অভিজ্ঞতা আছে। এই বীজগুলি ব্যাপক গবেষণার ফলাফল, যার উদ্দেশ্য বিভিন্ন কৃষি জলবায়ুর উপযোগী, উচ্চফলনশীল হাইব্রিড ফসলের উন্নয়ন। কৃষকেরা যাতে সর্বোচ্চ মানের বীজগুলি পান তা নিশ্চিত করতে উপাদানের সময় ক্রিস্টাল সর্বাধুনিক প্রযুক্তিগুলি গ্রহণ করে। ক্রিস্টালের পেঁয়াজ বীজগুলি জীবজ এবং অজীবজ প্রতিকূলতার প্রতি সহনশীলতা সহ উৎকৃষ্ট অঙ্কুরোদ্যম এবং শক্তিশালী উদ্ভিদের বিকাশ প্রদান করে।
অনুগ্রহ করে চমৎকার ফলন পেতে সর্বোত্তম কৃষি পদ্ধতি গ্রহণ করুন। নিচে কিছু সাধারণ পরামর্শ দেওয়া হল, তাই আমরা আপনাকে বলাই অনুগ্রহ করে কোনো সিদ্ধান্ত নেওয়ার আগে পরামর্শগুলি পড়ুন।

পেঁয়াজের জাত	মাষি, ডিরাট	মাষি, রেড অ্যান্ডমায়ার, এসপিএস ভেগা, ভেগা, ডিরা, ডিরাট	ইংডস গুলাবী, ইংডস রেড, রেড এডমায়ার, এসপিএস গুলাবী, এসপিএস রেড
সময়সীমা	110-120 DAS	85-90 DAS	100-110 DAS
খারিক	হ্যাঁ	হ্যাঁ	হ্যাঁ
রাবি	হ্যাঁ	হ্যাঁ	হ্যাঁ
বসন্ত	হ্যাঁ	হ্যাঁ	হ্যাঁ
সেচের উৎস	বর্ষাজল নির্ভর এবং সেচযুক্ত ড্রিপ, স্প্রিংকলার, বর্ষাজল হোস এবং পৃষ্ঠীয় সেচ	বর্ষাজল নির্ভর এবং সেচযুক্ত ড্রিপ, স্প্রিংকলার, বর্ষাজল হোস এবং পৃষ্ঠীয় সেচ	বর্ষাজল নির্ভর এবং সেচযুক্ত ড্রিপ, স্প্রিংকলার, বর্ষাজল হোস এবং পৃষ্ঠীয় সেচ

অনুগ্রহ করে মনে রাখবেন যে আবহাওয়ার পরিস্থিতি অনুযায়ী ফসলের বিকাশ ও পক্বতা আসার সময় ভিন্ন হতে পারে

ক্রমিক নম্বর	বিস্তারিত/ অপারেশন/ পদ্ধতি	প্রতি একর ইনপুটে অপারেশনের বিশদ
1	এলাকার জন্য উপযুক্ততা। কৃষি জলবায়ু জোন	তাপমাত্রা: পেঁয়াজ একাট ঠান্ডা আবহাওয়ার ফসল যা শক্তপোক এবং কিছুটা তুষারপাত সহ্য করতে সক্ষম। এটি বসন্ত এবং শরতে সবচেয়ে ভালোভাবে বিকাশ পায়। পেঁয়াজের বীজ 4.5 থেকে 30°C মাত্রির তাপমাত্রায় অঙ্কুরিত হয়, তবে সর্বোত্তম তাপমাত্রা 18 থেকে 24 °C।
2	জমি / মাটি	পেঁয়াজ ভালো হয় গভীর, জল-নিষ্কাশনযুক্ত, টিলা, দোআঁশ অথবা বালুময় মাটিতে। পেঁয়াজ সাধারণত 5.8 থেকে 7.0 pH এর মাটি পছন্দ করে, তবে এটি 7.6 পর্যন্ত pH সহ্য করতে পারে।
3	যত্ন। বপন/রোপণের সময়	বপনের সময় উপাদান এলাকা ভেদে পরিবর্তিত হয়। শীতকালীন বৃষ্টিপাতযুক্ত এলাকায়, বীজ ঠান্ডা জীবাশ্মযুক্ত এলাকায় আগস্ট থেকে মার্চের শেষ পর্যন্ত এবং আগস্টের শেষ থেকে মার্চের মাঝামাঝি পর্যন্ত বপন উপযুক্ত।
4	বীজের হার। বপন/রোপণের পদ্ধতি	ব্রডকাস্ট পদ্ধতি - 3 থেকে 4 কেজি/একর, প্রতিস্থাপন পদ্ধতি - 1 - 1.5কেজি/একর
5	মূল ক্ষেতের প্রস্তুতি এবং রোপণ	সীডবেড মাটির চেলা ভাঙতে 15 থেকে 20 সেন্টিমিটার গভীর চাষ করে ভালোভাবে প্রস্তুত করতে হবে। মাটি যতটা সম্ভব সমতল হওয়া উচিত, অন্তর্গত ক্রাফ কাঠামোযুক্ত এবং পর্যাপ্ত আর্দ্রতা থাকা উচিত, এছাড়াও অপচয় হয়নি এমন উদ্ভিদ পদার্থ মুক্ত থাকতে হবে।
6	ফাঁক	সারিতে গাছপালার মধ্যে 10 থেকে 15 সেন্টিমিটার এবং সারিগুলোর মধ্যে 15 থেকে 20 সেন্টিমিটার ফাঁক রাখা উচিত।
7	বপনের আগে বীজের পরিচর্যা	বপনের আগে সমস্ত বীজ কমপক্ষে 2 ঘণ্টা ধরে চলমান জলে ধুয়ে নেওয়া উচিত। পরামর্শদেওয়া হয় যে বীজগুলোকে 0.5% 2-মেরক্যুরিইথাইলমার্কারি ক্লোরাইড সলিউশনে 20 মিনিটের জন্য ডিঙ্কিয়ে রাখা। ডিঙ্কানো বীজগুলো বপনের আগে কক্ষ তাপমাত্রায় কমপক্ষে 6 ঘণ্টা শুকানো উচিত। নাইট্রোজেন সারি স্তরকৃত পুষ্টি এবং মাটির বৈশিষ্ট্যের উপর নির্ভর করে 120-180 কেজি/একর চূনাপাথর, অ্যামোনিয়াম নাইট্রেট অথবা অ্যামোনিয়াম সালাফেট ফসলের বিকাশের মরশুমে 2 অথবা 3 বার ধাপে ধাপে প্রয়োগ করা হয়। সাধারণত রোপণের সময় প্রায় 60 কেজি/একর নাইট্রোজেন দেওয়া হয় এবং বাকি উদ্ভিদগুলি প্রায় 10 থেকে 15 সেন্টিমিটার লম্বা হলে দেওয়া হয়। মোট 200-240 কেজি/একর সুপারফসফেট এবং 80-120 কেজি/একর পটাশিয়াম ক্লোরাইড বপনের ঠিক আগে প্রয়োগ করা হয়। বিকল্পভাবে, 2:3:2 (22) অনুপাতে তৈরি সার 400-480 কেজি/একর হারে প্রয়োগ করা যেতে পারে। এটি লক্ষ্য করা জরুরি যে এগুলো সাধারণ সুপারিশ এবং সারের প্রকৃত পরিমাণ মাটির পরিষ্কার ভিত্তিতে নির্ধারণ করা উচিত।
8	জৈব এবং রাসায়নিক সার	মাটিকে কখনও সার দিয়ে যেতে দেওয়া উচিত নয় এবং এটি 20 থেকে 25 সেন্টিমিটার গভীর পর্যন্ত আঁচ রাখা উচিত। উদ্ভিদগুলোর আঁচের তালিকা জল দেওয়া উচিত যতক্ষণ না নতুন অঙ্কুর বের হয়। প্রতি সেচে প্রায় 30 মিলিমিটার জল সরবরাহ করা উচিত। মাটির আর্দ্রতাকে উত্থাপনতন হলে খারাপ মানের মূল জন্মায় যা বিকৃত হয় এবং এতে অনেক ছোট রেশমি অথবা পাশের শিকড় থাকে।
9	সেচের সময়সূচী	পেঁয়াজের চারা বৃদ্ধির সাথে প্রতিযোগিতা করার আগে আগাছা নিয়ন্ত্রণ করা আবশ্যিক যাতে তা তাদের বিকাশে ব্যাঘাত না সৃষ্টি করে। সারির মধ্যে থাকা সব আগাছা হাত দিয়ে সরাতে হবে যাতে মূল ক্ষতিগ্রস্ত না হয়। আগাছা নিবারণ রাসায়নিকভাবে তেজজনশক প্রয়োগের মাধ্যমে করা যেতে পারে এবং কনটেইনারে
11	আগাছা নিবারণ/ মধ্যশস্য পরিচর্যা	পেঁয়াজের চারা বৃদ্ধির সাথে প্রতিযোগিতা করার আগে আগাছা নিয়ন্ত্রণ করা আবশ্যিক যাতে তা তাদের বিকাশে ব্যাঘাত না সৃষ্টি করে। সারির মধ্যে থাকা সব আগাছা হাত দিয়ে সরাতে হবে যাতে মূল ক্ষতিগ্রস্ত না হয়। আগাছা নিবারণ রাসায়নিকভাবে তেজজনশক প্রয়োগের মাধ্যমে করা যেতে পারে এবং কনটেইনারে
12	মুহূর্তপুষ্টি/বিকাশ নিয়ন্ত্রক ছিটান	মাইক্রোনিউট্রিয়েন্ট মিশ্রণের ছিটান পেঁয়াজের বিকাশ এবং উপাদান বাড়তে সাহায্য করতে পারে।
13	কীট এবং রোগ নিয়ন্ত্রণ	*ক্রফডস: গ্লোবাকামড 50% WG (0.5 গ্রাম/লিটার) *পাল মাকডসা: স্পাইরোমেসিফেন 240 SC (1 মিলিলিটার/লিটার) *সারকোসপরা পাতা দাগ রোগ: কারবেন্ডাজিম দিয়ে মাটি সেচ করুন (1গ্রাম/লিটার) *ডাউনি মিলডিউ: টেবুকোনাজল 50% + ট্রাইফ্লুরস্ট্রোবিন 25% WG (0.5 থেকে 1 গ্রাম প্রতি লিটার) অথবা ক্লোরথালোনিল 75% WP 1.0 মিলিলিটার/লিটার *স্ক্যাব এবং ড্যান্ডি: অফ: কারবেন্ডাজিম দিয়ে মাটি সেচ করুন (1গ্রাম/লিটার) ক্ষেতের রোগ এবং কীট নিয়ন্ত্রণ সম্পর্কে আরও তথ্যের জন্য, অনুগ্রহ করে আপনার স্থানীয় কৃষি অফিসারদের সঙ্গে পরামর্শ করুন।
14	ফসল কাটা	বপনের 100-120 দিন পরে ফসল কেটে নেওয়ার জন্য প্রস্তুত হয়, কিছু আগে ঘরে থাকা জাত 85-90 দিনে কাটা যায়
15	প্রত্যাশিত ফলন	সঠিকভাবে পরিচালিত ফসল থেকে আদর্শ শর্তে 8-10 টন উপাদান হয়।
16	সংরক্ষণ	পেঁয়াজের রাখার সময়সীমা বাড়াতে, এগুলো ঠান্ডা, শুষ্ক এবং ভাল বায়ুচলাচলযুক্ত স্থানে সংরক্ষণ করা উচিত। সংরক্ষণের আদর্শ তাপমাত্রা -13°C এর মধ্যে
17	করবেন না	দোরতে প্রাতিস্থাপন, বোশ ফাঁক, আঁটারক সার ব্যবহার, আঁটারক সেচ, জলাবদ্ধতা। পেঁয়াজ সরাসরি সূর্যালোক, প্লাস্টিকের ব্যাগে অথবা ফ্রিজে সংরক্ষণ করা উচিত নয়, কারণ এই অবস্থানগুলো তাদের আয়ু কমিয়ে দিতে পারে।
18	করবেন	পেঁয়াজের শীর্ষ অংশ হলুদ হতে শুরু করলে এবং ঝরে পড়লে কাটা উচিত। সংরক্ষণের আগে পেঁয়াজের পটোকৃতগুলি একত্রে দানি মাঠে শুকতে দানি। পেঁয়াজকে ঠান্ডা, শুষ্ক এবং ভালো বায়ুচলাচলযুক্ত স্থানে সংরক্ষণ করুন।
দ্রষ্টব্য	উপরের তথ্যটি একটি সাধারণ পরামর্শ। নির্দিষ্ট এলাকার জন্য বিশেষ সুপারিশের জন্য, অনুগ্রহ করে স্থানীয় রাজ্য কৃষি দপ্তরের সঙ্গে যোগাযোগ করুন।	
সতর্কতা	ফসলের বিকাশ এবং ফলন বিভিন্ন উপাদানের দ্বারা প্রভাবিত হতে পারে। অতএব, পরামর্শের জন্য আপনার স্থানীয় কৃষি অফিসারের সঙ্গে যোগাযোগ করা সুপারিশ করা হচ্ছে। নিশ্চিত করুন যে শুধুমাত্র উচ্চমানের সার এবং কীটনাশক ব্যবহার করা হচ্ছে। বীজ, সার এবং কোটনাশক ক্রয় করার রশিদ রাখুন।	

পিয়াজ- অনুশীলনৰ পেকেট

অভিনন্দন! আপুনি ক্ৰিষ্টেল পৰিয়ালৰ শ্ৰেষ্ঠতম পিয়াজৰ বীজ এটা বাচি লৈছে। উচ্চ মানৰ পিয়াজ বীজ উৎপাদনত ক্ৰিষ্টেলৰ যথেষ্ট অভিজ্ঞতা আছে। এই বীজবোৰ হৈছে বিস্মৃত গৱেষণাৰ ফলাফল, যাৰ লক্ষ্য হৈছে বিভিন্ন কৃষি জলবায়ুৰ বাবে উপযুক্ত উচ্চ-উৎপাদনশীল হাইব্ৰিড শস্য বিকাশ কৰা। বীজ উৎপাদনৰ সময়ত ক্ৰিষ্টেল শেহতীয়া প্ৰযুক্তি গ্ৰহণ কৰে যাতে কৃষকসকলে সৰ্বোচ্চ মানৰ বীজ লাভ কৰে। ক্ৰিষ্টেলৰ পিয়াজ বীজৰ বীজবোৰে জৈৱিক আৰু অজৈৱিক চাপৰ প্ৰতি সহনশীলতাৰ সৈতে উৎকৃষ্ট অংকুৰণ আৰু উন্নত শক্তি প্ৰদান কৰে। অনুগ্ৰহ কৰি উৎকৃষ্ট কৃষি পদ্ধতি গ্ৰহণ কৰি উৎকৃষ্ট উৎপাদন লাভ কৰক। তলত দিয়া সাধাৰণ পৰামৰ্শসমূহ প্ৰদান কৰা হৈছে, গতিকে আমি আপোনাক অনুৰোধ কৰোঁ যে আপুনি কোনো সিদ্ধান্ত লোৱাৰ আগতে এই পৰামৰ্শসমূহ পঢ়ক।

পিয়াজৰ জাত	মাহী, মাহী, ডিবাট, ডিবাট	বেড এডমায়ৰ, এসপীএস ভেগা, ডিবা	ইংডস গুলাবী, বেড এডমায়ৰ, এসপীএস গুলাবী, এসপীএস বেড
সময়কাল	110-120 DAS	85-90 DAS	100-110 DAS
খাৰিফ	হয়	হয়	হয়
বৰি	হয়	হয়	হয়
বসন্ত	হয়	হয়	হয়
জলসিঞ্চনৰ উৎস	বৰষুণ আৰু জলসিঞ্চিত (ড্ৰিপ, স্প্ৰিংকলাৰ, বৰষুণৰ নলী আৰু পৃষ্ঠ জলসিঞ্চন)	বৰষুণ আৰু জলসিঞ্চিত (ড্ৰিপ, স্প্ৰিংকলাৰ, বৰষুণৰ নলী আৰু পৃষ্ঠ জলসিঞ্চন)	বৰষুণ আৰু জলসিঞ্চিত (ড্ৰিপ, স্প্ৰিংকলাৰ, বৰষুণৰ নলী আৰু পৃষ্ঠ জলসিঞ্চন)

অনুগ্ৰহ কৰি মন কৰিব যে বতৰ অনুসৰি শস্যৰ বৃদ্ধি আৰু পৰিপক্বতা ভিন্ন হ'ব পাৰে।

ক্রমিক নম্বৰ	সবিশেষ/কাৰ্য্যা/অনুশীলন	কাৰ্যৰ বিৱৰণ, প্ৰতি একৰ ইনপুট
1	অঞ্চলটোৰ বাবে উপযুক্ততা। কৃষি জলবায়ু অঞ্চল	উষ্ণতা: পিয়াজ হৈছে শীতল বতৰৰ শস্য যি কঠিন আৰু কিছু জমা হোৱা সহ্য কৰে। ই বসন্ত আৰু গ্ৰীষ্মকালত ভালকৈ বৃদ্ধি পায়। মাটিৰ উষ্ণতা 4.5ৰ পৰা 30°Cত পিয়াজৰ বীজ অংকুৰিত হয়, য'ত অনুকূল 18ৰ পৰা 24 °C হয়।
2	ভূমি / মাটি	গভীৰ আৰু ভালদৰে পানী ওলাই যোৱা, চিলা, লোমীয়ৰ পৰা বালিচহীয়া মাটিত পিয়াজে সৰ্বোত্তম কাম কৰে। পিয়াজে মাটিৰ pH 5.8ৰ পৰা 7.0 পছন্দ কৰে, কিন্তু pH 7.6 পৰ্যন্ত সহ্য কৰিব পাৰে।
3	ঋতু বীজ সিঁচাৰ/পলোৱাৰ সময়	বীজ সিঁচাৰ সময় উৎপাদন ক্ষেত্ৰ অনুসৰি পৃথক হয়। শীতকালীন বৰষুণ হোৱা অঞ্চলত, বীজ আগষ্টৰ পৰা মাৰ্চৰ শেষলৈকে আৰু শীতল গ্ৰীষ্ম অঞ্চলত আগষ্টৰ শেষৰ পৰা মাৰ্চৰ মাজলৈকে সিঁচিব পাৰি।
4	বীজৰ হাৰ। বীজ সিঁচা/পলোৱা পদ্ধতি	সম্প্ৰচাৰ পদ্ধতি - 3ৰ পৰা 4 কেজি/বিঘা, ৰোপণ পদ্ধতি - 1 - 1.5 কেজি/বিঘা
5	মূল পথাৰৰ প্ৰস্তুতি আৰু ৰোপণ	বীজতলী ভালদৰে সাজু কৰি 15ৰ পৰা 20 ছে:মি: গভীৰতাত খেতি কৰি গুটিবোৰ ভাঙি পেলাব লাগে। মাটিও যিমান পাৰি সমতল হ'ব লাগে, টুকুৰা টুকুৰ গঠন ভাল আৰু পৰ্যাপ্ত আৰ্দ্ৰতা থাকিব লাগে, আৰু পচি যোৱা উদ্ভিদৰ সামগ্ৰীৰ পৰা মুক্ত হ'ব লাগে।
6	ব্যৱধান	শাৰী শাৰীকৈ গছৰ মাজত 10ৰ পৰা 15 ছে:মি:, শাৰীবোৰৰ মাজত 15ৰ পৰা 20 ছে:মি:
7	বীজ সিঁচাৰ আগতে বীজৰ শোধনীকৰণ	ৰোপণ কৰিবলগীয়া সকলো বীজ কমেও 2 ঘণ্টা ধৰি বৈ যোৱা পানীত ধুব লাগে। বীজবোৰ 0.5 % 2-মিথিল্লিইথাইলমার্কিউৰি ক্লৰাইডৰ দ্ৰৱত 20 মিনিট তিয়াই বখাটো বাঙুনিয়। তিয়াই থোৱা বীজ বীজ সিঁচাৰ আগতে কমেও 6 ঘণ্টা কোঠাৰ উষ্ণতাত শুকুৱাই লোৱা হয়।
8	সাৰ আৰু সাৰুৱা পদাৰ্থ	নাইট্ৰজেন সাৰ প্ৰয়োগ কৰাটো গুৰুত্বপূৰ্ণ আৰু মাটিৰ বিশ্লেষণৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি 120-160 কেজি প্ৰতি একৰ চুপশিল, এমোনিয়াম নাইট্ৰেট বা এমোনিয়াম ছলফেট 2 বা 3 টা ড্ৰেডিঙত বৃদ্ধিৰ বতৰত প্ৰয়োগ কৰা হয়। প্ৰায় 60 কেজি/একাৰ নাইট্ৰজেন সাধাৰণতে ৰোপণৰ সময়ত আৰু বাকীখিনি যেতিয়া উদ্ভিদবোৰ প্ৰায় 10ৰ পৰা 15 ছে:মি: উচ্চ হয় তেতিয়া প্ৰয়োগ কৰা হয়। বীজ সিঁচাৰ পূৰ্বে 200-240 কেজি প্ৰতি একৰ ছুপাৰফছফেট আৰু 80-120 কেজি প্ৰতি একৰ পটাছিয়াম ক্লৰাইড প্ৰয়োগ কৰা হয়। নতুবা 2:3:2 (22) সাৰ মিশ্ৰণ 400-480 কেজি/বিঘাত প্ৰয়োগ কৰিব পাৰি। মন কৰিবলগীয়া যে এইবোৰ সাধাৰণ পৰামৰ্শ আৰু প্ৰকৃত সাৰৰ পৰিমাণ মাটিৰ বিশ্লেষণৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি নিৰ্ণয় কৰা উচিত।
9	জলসিঞ্চনৰ সময়সূচী	মাটি কেতিয়াও শুকাবলৈ দিব নালাগে আৰু ইয়াক 20ৰ পৰা 25 ছে:মি: গভীৰতালৈকে আৰ্দ্ৰ কৰি ৰাখিব লাগে। গছপুলিবোৰত প্ৰতিদিনে হালধীয়া পানী প্ৰয়োগ কৰিব লাগে যেতিয়ালৈকে নৱজাতক গছপুলি ওলাই নাহে। প্ৰতিটো জলসিঞ্চনত প্ৰায় 30 মিলিমিটাৰ পানী যোগান ধৰিব লাগে। মাটিৰ আৰ্দ্ৰতাৰ বৃহৎ উঠা-নমাৰ ফলত শিপাবোৰ নিম্নমানৰ হ'ব যিবোৰ বিকৃত হৈ পৰে আৰু বহুতো সৰু চুলি বা কাষৰ শিপা থাকে।
11	ঘাঁহ কাটি/আন্তঃ-সংস্কৃতি	পিয়াজৰ পুলিৰ লগত প্ৰতিদ্বন্দ্বিতা কৰি ইহঁতৰ বৃদ্ধিত বাধা দিয়াৰ আগতে অপতণ নিয়ন্ত্ৰণ কৰিব লাগিব। শাৰীবোৰৰ মাজত থকা সকলো শাক-পাচলি শিকলিৰ ক্ষতি ৰোধ কৰিবলৈ হাতেৰে কাটি পেলাব লাগে। ঘাঁহনিৰূপক ঔষধ প্ৰয়োগ কৰিও ৰাসায়নিকভাৱে অপতণ নিয়ন্ত্ৰণ কৰিব পাৰি আৰু পাত্ৰত দিয়া নিৰ্দেশনা ভালদৰে পালন কৰিব লাগে।
12	ক্ষুদ্ৰ পুষ্টি/বৃদ্ধি নিয়ন্ত্ৰক স্প্ৰে	মাইক্ৰ নিউট্ৰিয়েণ্ট মিশ্ৰণ স্প্ৰেই পিয়াজৰ বৃদ্ধি আৰু উৎপাদন বৃদ্ধি কৰিব পাৰে।
13	কীট-পতংগ আৰু ৰোগ নিয়ন্ত্ৰণ	*এফিড: ফ্লনিকমিড 50 % WG (0.5 গ্ৰাম/লিটাৰ) *ৰঙা মকৰা: স্পাইৰ মেচিফেন 240 SC (1 মিলি/লিটাৰ) *চেৰক'স্পৰা পাতৰ দাগ: কাৰ্বেণ্ডাজিম (1গ্ৰাম/লিটাৰ) ৰ সৈতে তিয়াই লওক *ডাউনি মিলডু: টেবুক'নাজল 50% + ট্ৰাইফ্ল'ক্সিট্ৰ'বিন 25% WG (প্ৰতি লিটাৰত 0.5ৰ পৰা 1 গ্ৰাম) বা ক্ল'ৰ'থেল'নিল 75% WP 1.0 মিলি/লিটাৰ *ফ্লেব আৰু ডেম্পিং বন্ধ: কাৰ্বেণ্ডাজিম (1গ্ৰাম / লিটাৰ) সপ্ৰে ড্ৰেনচিং পথাৰত ৰোগ নিয়ন্ত্ৰণ আৰু ৰোগৰ বিষয়ে অধিক তথ্যৰ বাবে অনুগ্ৰহ কৰি আপোনাৰ স্থানীয় কৃষি বিষয়াৰ সৈতে যোগাযোগ কৰক।
14	শস্য চপোৱা	বীজ সিঁচাৰ 100-120 দিন পিছত শস্য চপোৱাৰ বাবে সাজু হয়, কিছুমান প্ৰাৰম্ভিক জাত 85-90 দিনত চপাব পাৰি
15	প্ৰত্যাশিত উৎপাদন	আদৰ্শ পৰিস্থিতিত ভালদৰে পৰিচালিত শস্যৰ পৰা 8-10 টন উৎপাদন হয়।
16	সংৰক্ষণ	ইয়াৰ শেফ লাইফ সৰ্বাধিক হ'বলৈ পিয়াজে ঠাণ্ডা, শুকান, ভালদৰে বায়ু চলাচল কৰা ঠাইত ৰাখিব লাগে। আদৰ্শ উষ্ণতা 7-13°Cৰ ভিতৰত থাকে
17	নকৰিবা	পলমকৈ ৰোপণ কৰা, অধিক ব্যৱধান, অতিৰিক্ত সাৰ, অতিৰিক্ত পানী দিয়া, পানী জমা হোৱা। পিয়াজে প্ৰত্যক্ষ সূৰ্যৰ পোহৰত, প্লাষ্টিকৰ বেগত বা ফীজিত ৰাখিব লাগে, কাৰণ এই অৱস্থাই ইয়াৰ আয়ুস কম কৰিব পাৰে।
18	কৰিবা	যেতিয়া শীৰ্ষবোৰ হালধীয়া হ'বলৈ আৰম্ভ কৰে আৰু ওপৰলৈ পৰি যায় তেতিয়া চপোৱা। বায়ুবোৰ সংৰক্ষণ কৰাৰ আগতে কেইদিনমান পথাৰত ভাল হ'বলৈ দিব লাগে। পিয়াজে ঠাণ্ডা, শুকান, ভালদৰে বায়ু চলাচল কৰা ঠাইত ৰাখিব।

টোকা ওপৰৰ তথ্যসমূহ সাধাৰণ পৰামৰ্শৰ বাবেহে দিয়া হৈছে। বিশেষ অঞ্চলৰ সৈতে সম্পৰ্কিত বিশেষ পৰামৰ্শৰ বাবে, অনুগ্ৰহ কৰি আপোনাৰ স্থানীয় ৰাজ্যিক কৃষি বিভাগৰ সৈতে যোগাযোগ কৰক।

সাৱধানতা শস্যৰ বৃদ্ধি আৰু উৎপাদন বিচিত্ৰ কাৰকৰ দ্বাৰা প্ৰভাৱিত হ'ব পাৰে। সেয়েহে, পৰামৰ্শৰ বাবে আপোনাৰ স্থানীয় কৃষি বিষয়াৰ সৈতে যোগাযোগ কৰক। নিশ্চিত কৰক যে কেৱল উচ্চ মানৰ সাৰ আৰু কীটনাশক ব্যৱহাৰ কৰা হয়। বীজ, সাৰ আৰু কীটনাশক ঔষধ ক্ৰম কৰাৰ বিলবোৰ ৰাখক।

